रसिक दोउ निरतत रंग भरे।

रास कुंज में रास मंडल रचि, जनक लली रघु लाल हरे।।

अमित रूप धरि करि कछु चेटक, जुग जुग तिय मधि श्याम अरे।।

❀ श्रीमते भगवते श्रीरामानन्दाचार्याय नमः ❀

श्री युगल रहस्य माधुरी विलास

* द्वितीय भाग *

लेखक—

श्रीमद्‌अग्रदेवाचार्य वंशावतंश अनन्त श्रीजानकीशरणजी

महाराज मधुकर तच्चरणारविन्द भ्रमर

" सीताशरण "

श्री तुलसी साहित्य प्रकाशन मण्डल, श्री रामकोट

श्रीअयोध्याजी (उ०प्र०)

श्री मैथिली रमणो बिजयते

श्रीमत्यै सर्वेश्वर्यै श्रीचारुशीलायै नमः

श्रीमन्मारुतनन्दनाय नमः

श्रीमते भगवते श्रीरामानन्दाचार्याय नमः

श्री सद्गुरवे नमः

श्री युगल रहस्य माधुरी विलास

द्वितीय भाग

लेखकः- श्रीमद्अग्रदेवाचार्य वंशावतंश
अनन्त श्री जानकी शरण जी महाराज मधुकर
तच्चरणारविन्द भ्रमर 'सीताशरण'

प्रकाशकः-श्री वैदेही सहचरीजी
मु०पो० सिरतोल, जि० बदायूँ
(उ० प्र०)

(श्री चारुशीला जयन्ती के पावन पर्व पर)

प्रथमावृति-१००० ※ न्यौछावर-२१)रु०

[सम्वत् २०४६ सन् १९८९]

श्रीसीताराम ❁ श्रीसीताराम ❁ श्रीसीताराम ❁ श्रीसीताराम ❁ श्रीसीताराम

श्री सीतारामाभ्यां नमः

अनन्त श्री विभूषित पं० श्रीअखिलेश्वर दासजी महाराज की

शुभ-कामना

परात्पर ब्रह्म श्री सीताराम जी की आराधना पंच रसों में विभक्त की गई है, जिसमें 'स्त्री प्रायमित रञ्जगत् के सिद्धान्त से शृंगार रस सर्व प्रधानता रखता है क्योंकि अन्यान्य रसोपासक अन्त में शृंगार रस में अपने को परिणत कर देते हैं। अतः वह प्रधान है जिसका बिशेष रूप से प्रतिपादक ग्रन्थ श्री कोशल खण्ड है, वह ग्रन्थ देव भाषा में होने के कारण सर्वोपकारक नहीं हो रहा है।

अतः उस ग्रन्थ का हिन्दी पद्यानुवाद श्रीसन्त 'सीताशरण' जी महाराज ने दो भागों में प्रकाशित करके साधारण जनों का बड़ा उपकार किया, इससे भावुक रसिक लाभ प्राप्त करेंगे। यह मेरा विश्वास है। इति शुभम्।

पं० अखिलेश्वर दासः

-: मंगलमयि आरती :-

आरति युगल रहस्य माधुरी ।
युगल विलाश भरी सुखकारी ॥ १ ॥

सीताराम सरस प्रिय लीला,
मंगल मोदमयी गुनशीला ।
भाव भक्ति भावना विभूषित,
रसिक जनन कहँ जीवन जरी ॥आरति०।

पढ़त सुनत ध्यावत सुखदाई,
सिय पिय परिकर युत हियआई ।
नित नव चरित हृदय दर्शावत,
लागत प्रेमिन प्रेम झरी ॥आरति०॥

मंगल मंजुल मोद भरी अति,
रसिक जननप्रिय ज्योतिजगमगति।
सब सुख रस की सार परम प्रिय
सब बिधि मोद विनोद भरी ॥आरति०॥

“सीताशरण” दृगन बिच झाँकी,
झलमल झलकत अतिवर बाँकी ।
रसिक जनन जीवन की जीवन,
परमानन्द प्रवाह परी ॥आरति०॥

राम विनम्र निवेदन राम

अनन्त ऐश्वर्य माधुर्य प्रेमरस सुधा सिन्धु श्री मैथिली रमण रसिक सम्राट श्री राघवेन्द्र सरकार की अहैतुकी कृपा से श्रीयुगल रहस्य माधुरी बिलास का द्वितीय भाग रसिक महानुभाओं के समक्ष प्रकाशित होकर आ रहा है। इस भाग में ५-६-७ अध्यायों का प्रकाशन है, पाँचवें अध्याय में स्वकीया परकिया पर बिचार एवं बनों के वैभव का वर्णन, विविध प्रकार के रास विलास का प्रसंग सखियों को अपना रूप बनाकर रास करने का आदेश देना, सखियों का प्रणय कोप एव प्रीतम को कमलनाल से बाँधना।

छठवें अध्याय में रहस्य चरित्र के अधिकारी अन धिकारी का बिचार पक्षियों द्वारा श्री राघवेन्द्र का रूप गुणशील स्वभाव सुनकर श्री मैथिली जू को पूर्वराग की जाग्रति तथा विरह वेदना का वर्णन माता श्रीसुनयना जी का श्रीविदेह जी से ब्याह की चर्चा करना, श्री शकर जी की आज्ञा से श्री विदेह जी का धनुष भग की प्रतिज्ञा करना, धनुष नहीं उठने पर राजाओं का श्री जनक जी से युद्ध करना, उन राजाओं के राज्य में दुर्भिक्ष पड़ने पर ऋषियों के कहने पर अपनी कन्या श्री जानकी जी सेवा में दासी भाव से अर्पण करना, श्री जानकीजी का उन कन्यायों को सखी भाव से स्वीकार करना, सखियों की प्रार्थना पर श्रीमैथिली जूका श्री रामरूप धारण कर रास करना, प्रीतम की स्मृति करके मैथिली जूकी विचित्र दशा का वर्णन, योगिनी सखी द्वारा श्री राघवेन्द्र का चित्र बनाना, सखी का स्वप्न देखना।

सातवें अध्याय में श्रीनारद जी का अवध आकर एकान्त में श्री राघवेन्द्र से मिलकर श्री मैथिली जू के रूप गुणशील स्वभाव की चर्चा तथा अपने प्रति समर्पित भाव की जानकारी होने पर श्रीराम की विचित्र दशा का वर्णन, श्रीदशरथजी को स्वप्न में श्रीरंग-नाथ जी का दर्शन होना, श्रीशंकर जी का स्वप्न में श्रीविश्वामित्र जी को दर्शन देकर आदेश देना, श्री विश्वामित्र जी का श्री अवध आकर श्रीराम लक्ष्मण को मांगना, श्री दशरथ जी के वात्सल्य का

प्रदर्शन श्री वशिष्ठ जी के समझाने पर श्रीराम लक्ष्मण को देना, श्रीविश्वामित्र जी का श्रीराम लक्ष्मण के साथ मिथिला प्रवेश, श्री जनक जी द्वारा स्वागत सत्कार होना, श्रीरामजी द्वारा धनुष टूटना, श्रीजानकीजी का जयमाला पहराना, श्रीअवध से बारात का जनक पुर आना, तथा चारों भाईयों का व्याह सम्पन्न होना, माताओं ने चारों वर वधुओं का परिछन कर महल में विराजमान कराया, श्रीराम का दोबारा श्री मिथिला जाना, श्री जनक जी का वात्सल्य वर्णन, श्रीसुनयना माता जी की गोद में शिर रखकर पाहुन का सोना, सखियों के प्रश्न पर पाहुन का उत्तर देना, विनोदार्थ सखियों द्वारा पहुन के वस्त्र भूषण चुराकर रख देना, विविध प्रश्न उत्तर के बाद युक्ति पूर्वक सखियों का वस्त्र भूषण लौटा देना, सखियों की प्रार्थना पर श्री रामजी का रास करना, गोप कन्यादि सखियों की विरह वेदना का वर्णन तथा शुक पक्षी को पत्र लेकर मिथिला भेजना, पत्र पढ़ कर श्री राम जी की विषम परिस्थिति का वर्णन कानोकान सन्देशा पाकर श्री दशरथ जी का सुमन्त को भेजकर श्रीराम को अवध बुलवाना, सुमन्त के समझाने पर श्री जनक जी का श्रीराम को अवध जाना स्वीकार करना, माता श्री सुनयनाजी का वात्सल्य एवं श्रीजानकी जी को समझाना तथा श्रीराम जी से प्रार्थना करना, श्रीजानकी जी की विदाई के समय करुणा रस का वर्णन, श्री सीतारामजी का अवध आगमन, माता-पिता आदि समस्त परिवार को सुख प्रदान करना, श्रीसीतारामजी की कृपा से द्वितीय भाग का प्रकाश सम्पन्न हो गया, यद्यपि प्रकाशन में बहुतसी त्रुटियाँ हैं जो हमारी अवोधता का प्रतीक हैं, अतएव रसिक महानुभावों से निवेदन है कि अपनी बस्तु को सुधार कर रसास्वादन करने की कृपा करें ।

रसिक महानुभावों का अनुचर,

"सीताशरण"

श्री तुलसी सहित्य प्रकाशन मण्डल,

श्रीराम कोट श्री अवध धाम (उ० प्र०)

अनुक्रमणिका

विषय — पृष्ठ

पंचमोऽध्यायः—

१—स्वकीया परकीया निर्णय ११
२—बन बैभव वर्णन १८
३—रास विलास वर्णन २१
४—सखियों का आमर्ष ३१
५—सखियों का परिहास ३८
६—उबटन स्नान श्रृङ्गार ४०
७—वन विहार ४२
८—प्रियतम का स्तब्ध होना ५४
९—सखियों का अपना रूप बनाकर रास करने की आज्ञा प्रीतम द्वारा ६३
१०—सखी के मान करने पर प्रीतम वेष धारी सखी का मनाना ६८
११—सखियों का प्रणय कोष ६९
१२—प्रीतम को सखियों द्वारा कमल नाल से बाँधना ७१
१३—सखियों का विनोद ७४

षष्टमोऽध्यायः—

१४—रहस्य के अधिकारी अनाधिकारी का विचार ८४
१५—पक्षियों द्वारा श्रीराम जी का रूप शील गुण श्रवण कर श्री जानकीजी का उदास होना ८६
१६—विरह वर्णन ८८
१७—सखियों द्वारा माता जी को श्री जानकी जी स्थिति का ज्ञान तथा माता जी का समझाना ९०
१८—सुनयना माता का विदेहजीसे श्रीजानकी जी के व्याह की चर्चा करना ९१
१९—श्री शंकर जी द्वारा श्रीजनक जी को धनुष भंग कराने की प्रतिज्ञा करने का आदेश ९४
२०—धनुष यज्ञ में राजाओं का आना ९६
२१—धनुष उठाना धनुष न उठने पर क्रोधित होकर श्री विदेह जी से युद्ध करना, शंकर जी के गणों द्वारा राजाओं का भागना तथा उनके हाथी घोड़ा मरना
२२—ऋषियोंके कहने पर राजाओं का श्रीजानकी जी को अपनी अपनी कन्यायें अर्पण करके क्षमा मागना, श्रीजानकी जी द्वारा सभी कन्यायों की स्वीकृति ९८ से १०३ तक

विषय पृष्ठ

२३—कन्यायों की प्रार्थना १०४

२४—श्रीजानकी जी द्वारा कन्यायों को सखि रूपमें अपनाना १०५

२५—गौरी पूजन एवं बरदान प्राप्ति १०७

२६—सखियों की प्रार्थना पर श्री-जानकीजी का राम रूप धारण कर रास करना ११२

२७—चन्द्रमा का रास मण्डल में प्रकाश करना और सखियों का प्रणाम करना ११७

२८—भूदेवी के द्वारा श्रीजानकीजी का शृङ्गार ११८

२९—देवांगनाओं द्वारा मिथिला की प्रशंसा ११९

३०—प्रीतम की स्मृति कर श्री-जानकी जी की विचित्र दशा का वर्णन १२१से१२९तक

३१—योगिनी द्वारा श्रीरामजी का चित्र बनाना १३०

३२—सखी का स्वप्न देखना १३१

सप्तमोऽध्यायः—

३३—श्रीनारदजी का अवधमें श्री-राम से मिलकर श्री जानकी जीकी विचित्रदशा का वर्णन कर अपनाने का निवेदन करना १३९

विषय पृष्ठ

३४—श्रीसीतारामजी का अभिन्न-तत्व वर्णन १४०

३५—श्री नारद जी के मुखसे श्री-जानकीजीकी अपनेप्रति प्रीति सुनकर श्रीरामजीकी विचित्र स्थिति होने का वर्णन १५१

३६—श्री दशरथ जी को स्वप्न में श्रीरंगनाथजी का दर्शन तथा उपदेश १५६

३७—श्री शंकरजी का स्वप्न में श्री विश्वामित्रजीको अवधजाकर श्रीराम लक्ष्मण को माँग कर मिथिला पहुँचानेका आदेश १५८

३८—श्री विश्वामित्र जी का अवध आगमन तथा श्रीदशरथजीसे श्रीराम लक्ष्मणको मांगना १५९

३९—श्रीदशरथजी का वात्सल्यवश विश्वामित्रजी को श्रीरामको न देने की प्रार्थना करना १६१

४०—श्रीवशिष्ठजी का समझाना १६६

४१—श्रीराम लक्ष्मण सहित विश्वा-मित्र जी का मिथिला प्रवेश विदेहजी द्वारा स्वागत करके महल में ठहराना १६९

४२—श्रीरामजी का धनुष तोड़ना तथा श्री जानकी जी का जय माल पहिराना १७०

श्री युगल रहस्य माधुरी विलास

बृहत्कौशल खण्डे—

रोला छन्द—

सुन्दर सुखद सुजान सरल सुषमा सुख सागर।
प्रीतम प्राण अधार प्रेम पूरक नव नागर ॥ १ ॥
कलित कामिनी केलि कला कल कुशल सुघर वर।
परिकर परम प्रवीन प्रीति बश किये सु छवि धर ॥ २ ॥
करत केलि कमनीय परम रमनीय मधुर तर।
सकल अमंगल हरन सरस रस भरन हृदय हर ॥ ३ ॥
अखिल सुमंगल मूल शूल त्रय ताप नसावन।
दायक परमानन्द परम पावन कृत पावन ॥ ४ ॥
सर्वाधार परेश परम पर तत्त्व परम गति।
परब्रह्म अखिलेश अमल अनवद्य सरस अति ॥ ५ ॥
सदा स्वतन्त्र अनूप अगुन गुन सागर रघुवर।
नागर नवल किशोर सखिन रस बोर सुनटवर ॥ ६ ॥
बने प्रेम पर तन्त्र रास लम्पट मन भावन।
रघुनन्दन रसिकेश अमल रस धार बहावन ॥ ७ ॥
सकल जगत आधार अखिल चेतन सुखदायक।
सब विधि पूरन काम राम रघुकुल मणि नायक ॥ ८ ॥

सर्व आत्मा रमन समन भय वारिज लोचन ।
रास रसिक रघुवीर धीर सन्तन भव मोचन ॥ ९ ॥
अपनी प्रियाँ प्रवीन देव कन्या समुदाई ।
तिन सँग दृढ़ अनुराग पगे रस निधि रघुराई ॥१०
विपिन बिहार बिनोद विपुल बिधि करत सखिन सँग ।
सरसावत सुख स्वाद रमावत रमत तिनय अँग ॥११॥
कोटिन विमल मयंक सरिस बिधु बदन प्रकाशा ।
बिलसत सखियन संग करत अति हास विलाशा ॥१२॥
निरखत निर्मल शरद सुऋतु सुचि सुखद सुहावन ।
राजत सखिन समेत राजनन्दन मन भावन ॥१३॥
मनिमय महल अनेक अमल सुठि सुखद रसाला ।
घर घर अवध मझार लसहिं तिन में बहुबाला ॥१४॥
विधु बदनी बर बधू बिमल रघुवर गुन गावहिं ।
निर्मल बिधु वर कुन्द सरिस सुनि सुर सुख पावहिं ॥१५॥
सुयश उदार अपार सकल लोकन में छायो ।
गावत शेश महेश गणप बिधि पार न पायो ॥१६॥
इमि श्री अवध मझार रमत रसिकेश श्याम घन ।
पर नर नारी अनघ अमल सब शुद्ध मुदित मन ॥१७॥
यदि कोइ संका करै नारि रघुवर गुन गावहिं ।
यह अति अनुचित अहै शास्त्र श्रुति दोष बतावहिं ॥१८॥
तो सुनिये धरि ध्यान राम को रूप रसाला ।
सत् चित् आनँद रूप वाहि निरखत सब बाला ॥१९॥

अतिसय प्रेम विभोर होत मन फेरि न पावहिं ।
गुन गन लखि आकृष्ट होत निर्मल यश गावहिं ॥२०॥
जिमि चुम्बक लहि लोह अवसि खींचत बरिआई ।
तिमि रघुवर छबि निरखि विकल बनिता समुदाई ॥२१॥
रूप अनूप उदार अमल अति चित आकर्षक ।
जड़ चेतन नर नारि अखिल जीवन हिय हर्षक ॥२२॥
अतः अवसि लखि रामरूप गुण शील बिकाई ।
अखिल विश्व नागरी करहिं रघुवीर बड़ाई ॥२३॥
पतिव्रत भंग न होय अपर कछु दोष न लागै ।
सकल प्राण के प्राणनाथ प्रभु पद अनुरागै ॥२४॥
प्रभु करुणा गुन ऐन कोटि अमन्थ मद मर्दन ।
परांगना सँग कदा करत नाहिन रस बर्धन ॥२५॥
यद्यपि प्रभु सर्वेश अखिल जग नाथ कहावत ।
तदपि राखि श्रुति सेतु नवल लीला प्रगटावत ॥२६॥
जेहि तिय को सम्बन्ध लगेउ केहु अपर पुरुष संग ।
भोग बुद्धि से कदा न रघुवर रँगत तासु रँग ॥२७॥
परकीया को तिया भाव से लखत न रामा ।
पुत्री भगिनी मातु सरिस मानत सुख धामा ॥२८॥
जासु प्रबल सम्बन्ध नाथ पद पंकज लागत ।
ताको सब बिधि भाव पूरि अतिसय रस पागत ॥२९॥
परकीया नायिका नेह कितनोइ दिखलावै ।
रघुवर राजकिशोर संग रस रंग न पावै ॥३०॥

अन्य भोग्य लखि ताहि सदा त्यागत रघुनन्दन ।
मेटत बिषय बिकार तासु प्रभु भव भय भन्जन ॥३१॥
अन्य तियन सँग रमन किये अतिसय अघ लागै ।
सर्वेश्वर परमीश माहिं यह भाव न जागै ॥३२॥
जासु नाम जपि जीव होत पावन जग तारन ।
पाप पुण्य से रहित सदा सो प्रभु जग कारन ॥३३॥
नाहिन लागत पाप तदपि श्रुति पन्थ निवाहत ।
याही से मुनि देव मनुज सब प्रभुहिं सराहत ॥३४॥
रमत स्वकीया माहिं सतत रघुराज कुँवर वर ।
तिनहीं सँग सब भाँति लहत सुख स्वाद सुछबिधर ॥३५॥
विपुल बिनोद बिलाश हास रस मगन तियन सँग ।
सकल स्वकीयन मध्य रमत रघुवर रति रस रँग ॥३६॥
यदि कोइ शंका करै ब्रह्म सब भाव ग्रहण करि ।
पूरक सब अभिलाष हदय अतिसय उगंग भरि ॥३७॥
कोटि काम मन हरन सर्व प्रेरक सर्वेश्वर ।
असंख्येय गुण दिव्य भव्य सागर अखिलेश्वर ॥३८॥
रघुनन्दन छबि निरखि मोह बस सब सुकुमारीं ।
रमण करैं प्रभु संग सुपति व्रत धर्म बिसारीं ॥३९॥
तो पावनता नष्ट होय सब लोक नसावै ।
पतिव्रता पुनि कहहु जगत में कौन कहावै ॥४०॥
याते कृपा निधान परम वात्सहय विभूषित ।
परकीया तिय त्यागि स्वकीयहिं जान अदूषित ॥४१॥

रमत रसिक शिरमौर सतत रघुवंश कुँवर वर ।
देत सकल सुख स्वाद प्रेम पागे प्रमोद घर ॥४२॥
परकीया तिय ग्रहहिं न तो किमि ब्रह्म कहावैं ।
यदि कोइ शंका करै सूत वाको समुझावैं ॥४३॥
सकल धर्म श्रुति सेतु सुरक्षण हित अवतारा ।
लीनो पूरन काम राम रघुवंश मझारा ॥४४॥
सदा सत्य संकल्प राम रसिकेश हृदय हर ।
शिव विधि विष्णु गणेश शेष पूजित उदार तर ॥४५॥
आगम निगम सनेह सहित कल कीरति गावत ।
नेति नेति नित कहत कदा कोउ पार न पावत ॥४६॥
तासु सत्य संकल्प मृषा कबहूँ नहिं होई ।
चाहे कोटि प्रकार करै साधन किन कोई ॥४७॥
परकीया तिय ग्रहण करत सत धर्म नसावैं ।
तो फिर क्यों रघुवीर धर्म रक्षक कहलावैं ॥४८॥
यद्यपि धर्म अधर्म ब्रह्म को परसत नाहीं ।
जग शिक्षण हित तदपि रमत नाहिंन सब माहीं ॥४९॥
परकीया सँग रमण करत संकल्प मिटाई ।
मृषाहोत संकल्प सकल जग तुरत नशाई ॥५०॥
धर्म सुरक्षण हेतु राम संकल्प दृढ़ायो ।
भक्त सुखद सुर विप्र धेनु लगि चरित दिखायो ॥५१॥
जाहि गाय सुनि ध्याय मनुज होवैं भव पारा ।
याही से रसिकेश कीन लीला बिस्तारा ॥५२॥

परकीया तिय संग रमै जो श्री रघुराई।
भ्रष्ट होय संसार धर्म तजि लोग लुगाई ॥५३॥
करैं स्वतन्त्र बिहार बात यों कहैं बनाई।
जग शिक्षक रघुराज कुँवर यह रीति चलाई ॥५३॥
याते होतौ ब्रह्म राम जग शिक्षण काजा।
परकीया को त्यागि स्वकीया प्रिय रघुराजा ॥५५॥
धर्मवान सचरित्र एक पत्नी व्रत धारी।
करत प्रसंशा भूरि भूरि सुर नर मुनि भारी ॥५६॥
इक पत्नी व्रत लीन्ह राम सुनि परकीया गन।
त्यागि विषय की आश सुगुन गावहिं अति सुचि मन ॥५७॥
यद्यपि मोहित हृदय तदपि सुनि प्रभु व्रत भारी।
भूलि रमण रति भाव नहीं लावैं कोउ नारी ॥५८॥
जिनको दृढ़ सम्बन्ध भयो रघुवर के संगा।
तिनहिं स्वकीया मानि रँगत प्रीतम रस रंगा ॥५९॥
अमित नायिकन संग करत रघुबीर बिहारा।
सकल स्वकीयन मध्य नवल रसिकेश उदारा ॥६०॥
करि बहु रास बिलास सकल सुख स्वाद चखाई।
बिलसत राजकिशोर परम रसबोर सदाई ॥६१॥
यदपि स्वकीयाँ नारि अमित सब सँग रघुनन्दन।
रमि रमाय सुख देत करत सबको मन रंजन ॥६२॥
परकीया को त्याग सदा तेहि ते रसिकेश्वर।
इक पत्नी व्रत वान कहावत प्रभु सर्वेश्वर ॥६३॥

कोइ सुनि हठ जनि करै राम एक तिय व्रत धारी।
प्रभु ग्राहक सुचि भाव प्रेम बश श्री धनु धारी ॥६४॥
जो आज अगुन अरूप अलख अविगत अविकारी।
अमल अनीह अजीत अकथ श्रुति शास्त्र पुकारी ॥६५॥
परतम परम परेश ब्रह्म ब्यापक विभुजोई।
भक्ति प्रेम परतन्त्र वनेउ नृप सुत प्रभु सोई ॥६६॥
शिव बिधि विष्णु गनेश शेष कोइ पार न पावत।
डरत सुरासुर जाहि सबहिं रघुवीर नचावत ॥६७॥
प्रेम भाव भरि मातु अँगुरिया पकरि चलावति।
लखराय महि परत मोद युत हँसि दुलरावति ॥६८॥
सहित सनेह उठाय चूमि मुख अति सुख पाई।
चलव सिखावति मातु प्रेम की यह प्रभुताई ॥६९॥
यहि बिधि पावन प्रेम पाश बँधि श्री रघुनन्दन।
सरस स्वकीयन संग रमत सब बिधि जग वन्दन ॥७०॥
परकीया में अधिक पुष्टि रस की कवि मानत।
प्राकृत नायक मध्य बात यह सच सब जानत ॥७१॥
मन बानी गोतीत अमल अनवद्य एक रस।
प्रकृति पार परमीश भनत श्रुति शास्त्र विमल यश ॥७२॥
लक्ष्मणाग्रज राम नवल नायक उदार तर।
परकीया रति असति मानि नहिं रमत रसिक वर ॥७३॥
रघुवर को सिद्धान्त परकिया सँग रति कीने।
नाशत सुकृत महान पाप बाढ़त रस लीने ॥७४॥

पर दारा सँग रमण करत अति पातक लागत ।
जानत जग के लोग तदपि परतिय रस पागत ॥७५॥
यद्यपि प्रभु अखिलेश परकिया सँग रति कीने ।
होवें नहिं कछु हानि हृदय अतिसय रस भीने ॥७६॥
तदपि जगत सिख देन हेत परकिया न परसें ।
रघुवर राज किशोर स्वकीयन सँग नित सरसें ॥७७॥
मर्यादा जग माहिं बाँधि पालत रघुराई ।
यद्यपि परम स्वतन्त्र तदपि परतन्त्र जनाई ॥७८॥
परकीया सँग रमे कदा रस पुष्टि न होई ।
रसक्षति होय अवश्य करें परतिय रति जोई ॥७९॥
याते प्रभु सर्वेश राम रसिकेश मोद घर ।
रमत स्वकीयन सँग सतत निज हिय उमंगभर ॥८०॥
इमि बहु विधि समुझाय रसिकवर सूत सुजाना ।
वर्णत बिशद बिनोद विपुल रस सिन्धु महाना ॥८१॥
नवल नायिका बृन्द निरखि पिय बदन विमलवर ।
करहिं कामना काम केलि हिय मध्य सुखद तर ॥८२॥
प्रीतम हमरे साथ विपिन मधि रास बिहारा ।
करि हम सबके सँग देहिं सुख स्वाद अपारा ॥८३॥
हम सब सेवा करहिं भली विधि हिय हर्षाई ।
इमि सुचि सुखद सुचाह सखिन मन में अधिकाई ॥८४॥
पर हम सब अनुचरीं सतत पिय सुरुख निबाहैं ।
तत्सुख सुखी सदैव स्वसुख कबहूँ नहिं चाहैं ॥८५॥

पियहिं करब संकेत महाँ अनुचित कहलाई ।
एहि बिधि करहिं बिचार जानि जिय की रघुराई ॥८६॥
उत्कण्ठा लखि प्रवल प्रेम पूरक रस सागर ।
नवल नायिकन संग नेह भरि पिय नवनागर ॥८७॥
सजि नख सिख श्रृंगार नवल वर बसन लसन तन ।
भूषन दूषन रहित अमल अद्भुत मोहत मन ॥८८॥
बिपिन बहार बिहार वेष वर बिरचि रसिक वर ।
चले सखिन सुख स्वाद देत पागे सनेह सर ॥८९॥
यह सब सखी सुहाग राग रंजित उदार मन ।
पूजे पिय पद पद्म धारि जग में अनेक तन ॥९०॥
अमित जन्म को शुद्ध सुकृत संचित अति पावन ।
तब पाये प्राणेश रसिक वल्लभ मन भावन ॥९१॥
अपर नायिका नित्य पार्षद मध्य सुखारी ।
बनि परिकर पद पूजि नवल लीला विस्तारी ॥९२॥
देत पियहिं सुख स्वाद सकल बिबि पिय हर्षाई ।
सोइ आईं पिय पास करन सेवा उमगाई ॥९३॥
प्रभु को निज सर्वस्व मानि पद अर्चन करहीं ।
परमानन्द प्रमोद सतत अपने मन भरहीं ॥९४॥
येहि सब परिकर नवल मधुर रस के अधिकारी ।
पिय सँग दिव्य बिहार करहिं पिय होहिं सुखारी ॥९५॥
अपरन यह रस स्वाद कदा सपनेहुँ में पावैं ।
करि करि कोटि कलेश सुतप करि देह सुखावैं ॥९६॥

करहिं ज्ञान वैराग योग साधन समुदाई ।
परिकर कृपा कटाक्ष बिना रस परसि न जाई ॥९७॥
ये सब सखी समूह कृपा करि जाहि निहारैं ।
वाके मानस माहिं मधुर सुचि रस संचारैं ॥९८॥
फूले फले अनेके भाँति वर बिटप सुहावन ।
साखा सुठि सुकुमार नमित सबको मन भावन ॥९९॥
ललित लता लपटाहिं सुतरु मधि सरस सुहाई ।
"सीताशरण" अशोक पंक्ति अतिसय सुखदाई ॥१००॥

दो०-कल्प वृक्ष से अधिक अति, उत्तम विटप रसाल ।
सीताशरण लगत भले, बिहरत जहँ रघुलाल ॥१॥

उठत सुगन्ध झकोर भ्रमर गुंजत समुदाई ।
करत मधुर मकरन्द पान रसलहि हर्षाई ॥ १ ॥
झरति पराग अपार अवनि अति सरस बनाई ।
विहरत राजकिशोर सखिन सँग आनँद पाई ॥ २ ॥
मधुकर मधुर सुगान करहिं सखियन सुखदाई ।
पिय गुन गन सुचि सुयश सुनहिं परिकर चितलाई ॥ ३ ॥
मानहुँ ये सब देव सुतरु बनि मधुप सुहावन ।
गावत पिय को सुयश सखिन मनहर अति पावन ॥ ४ ॥
लता बितान महान सघन जहँ रवि न प्रकाशै ।
चन्द्र किरन नहिं जाय बिबिधि महि वनज बिकाशै ॥ ५ ॥
शाखा ललित विशाल ललकि अवनी तक आवैं ।
निरखि बटोही जात वाहि निज निकट बुलावैं ॥ ६ ॥

देत सुमन मन हरन सुफल दै स्वागत करहीं ।
बिहरत तहँ रसिकेश सखिन सँग अति सुख भरहीं ॥ ७ ॥
अखिल लोक अभिराम राम सब बिधि हत कामा ।
पूरक सब अभिलाष प्रेम लम्पट सुख धामा ॥ ८ ॥
तिनहिं परम अभिराम देत वर बिपिन सुहावन ।
बिहरत बिपुल बिहार पगे प्रीतम मन भावन ॥ ९ ॥
यहि बिधि सुन्दर श्याम चतुर चूड़ामणि मन हर ।
बिहरत सरयू पुलिन निकुंजन मध्य रसिक वर ॥१०॥
संगसखी समुदाय सुघर सब सुभग सयानी ।
करहिं केलि कमनीय कला कुशला गुन खानी ॥११॥
स्वर्ण रत्नमणि जड़ित बिभूषन बसन लसन तन ।
सरस सुधा सम असन मधुर पावत प्रमोद मन ॥१२॥
निज कर प्रियन पवाय प्रेम पूरित रघुनन्दन ।
ते सब पियहिं पवाय करहिं पिय को अभिनन्दन ॥१३॥
देत सबहिं सुख स्वाद एक सम नृपति कुँवर वर ।
करि आदर सम्मान सहित हिय अति उमंगभर ॥१४॥
सखियन यूथ बिभाग बिरचि अधिकार समाना ।
दीनो कृपा निधान सबहिं प्रभु परम सुजाना ॥१५॥
निज अधिकार सुभेद समय लखि पिय ढिग आई ।
सेवा करहिं सनेह सहित सब सखि सुख पाई ॥१६॥
कलह द्वैष अभिमान रहित सब रूप उजारी ।
नृत्य गान दिखलाय करहिं नित पियहिं सुखारी ॥१७॥

लीला ललित लखाय सखीं पिय को रस पागहिं ।
सेवहिं चरण सरोज हृदय अतिसय अनुरागहिं ॥१८॥
जेहि को जेहि बिधि समय यथोचित प्रभु ने दीना ।
तेहि तेहि अवसर पाय सखिन सेवा रस लीना । १६॥
बहु बिधि वाद्य बजाय नृत्य करि गाय गीत वर ।
निज बस कीने कान्त कामिनि केलि कलाकर ॥२०॥
कबहुँ पिय रुचि जानि सकल सहचरी एक सँग ।
आवहिं पिय के पास करहिं क्रीड़ा सनेह रँग ॥२१॥
जिमि षट ऋतु में बिबिध भाँति फल फूल सुहावैं ।
तिमि सब सखियाँ भिन्न-भिन्न गुण गान सुनावैं ॥२२॥
अति रमणीय सुवेष साजि निज कला दिखाई ।
"सीताशरण" सुगान गाय नृत्यहिं सुखपाई ॥२३॥
पिय की सेवा करहिं सकल क्रीड़ा रस भीनी ।
पावहिं परमानन्द नवल नायिका प्रवीनी ॥२४॥
निज गुण शील सनेह सरस सेवा दिखलाई ।
स्ववस किये रसिकेश राजनन्दन रघुराई ॥२५॥
राजकुँवर चितचोर नवल दक्षिण नायक वर ।
सकल नायिकन संग रमत नटवर उमंग भर ॥२६॥
सब सहचरीं प्रवीन यही अपने मन जानत ।
प्रीतम प्राण अधार अधिक मोको सनमानत ॥२७॥
मोहिं पर प्यार विशेष आन तिय मो सम नाहीं ।
याते वल्लभ सतत रमत हमरे सँग माहीं ॥२८॥

यद्यपि उपमा रहित बिमल विधु वदनी बाला ।
सब सुषमा सुख सदन परम रमनीय रसाला ॥२९॥
तदपि रसिक शिरमौर कृपा ऐसी दर्शावत ।
सकल सखिन मन मृगन सरस छवि जाल फसावत ॥३०॥
जे प्रभु प्रियाँ प्रवीन श्रेष्ठ सखि भाव मझारी ।
तोउ लखि पिय गुणशील नेह हिय परम सुखारी ॥३१॥
सुठि स्वभाव सौहार्द सरलताई मृदुताई ।
निरखि सरल सौन्दर्य महाँ माधुर्य बिकाई ॥३२॥
पिय की कृपा कटाक्ष पाय आनन्द समाई ।
सदा दास्यता करहिं हृदय अस चाह बढ़ाई ॥३३॥
जे दासियाँ प्रवीन कदा सखि पद नहिं चाहैं ।
पिय पद पंकज भाव भरीं सुचि नेम निवाहैं ॥३४॥
सेवहिं चरण सरोज हृदय में अति सुख पाई ।
त्रण सम तीनोंलोक बिषय बासना मिटाई ॥३५॥
निज प्रिय परिकर बृन्द मध्य बिलसत रघुराई ।
देत सबहिं सुख स्वाद परम रस सिन्धु डुबाई ॥३६॥
करि ब्यबहार समान सबहिं सुख रूप बनाई ।
पगे नायिकन नेह नवल नायक हर्षाई ॥३७॥
तिमि रघुवीर उदार प्रेम रस सुख छबि सागर ।
सुठि सुकुमार सुशील सरल शुभ गुन गन आगर ॥३८॥
नवल नायिका बृन्द स्वयं निज प्रेम बढ़ाई ।
नृपकिशोर चितचोर कण्ठ चाहहिं लपटाई ॥३९॥

नहिं कोइ अस सामर्थ वान जो नयन हटाई ।
रघुनन्दन को त्यागि अन्य में देहि लगाई ॥४०॥
जिमि सरिता को वेग कदा कोउ रोकि न पावै ।
तिमि रघुबर को देखि सुमन बिन मोल विकावै ॥४१॥
जे नागरी सनेह पगीं सब भाँति अनूढ़ा ।
नृप कुमार पद कंज मंजु में प्रेम सुगूढ़ा ॥४२॥
कहीं जगत में जनमि प्रेम वश प्रभु ढिग आईं ।
राजकिशोर रसज्ञ कृपा से रति रस पाईं ॥४३॥
करि तिनको स्वीकार सकल विधि पोषण कीना ।
प्रीतम परम प्रवीन परम प्रेमामृत दीना ॥४४॥
राज सुवन सामर्थ वान सब के हित कारी ।
अति उदार रमणीय बेष रस निधि धनु धारी ॥४५॥
जो सुचि भाव सनेह सहित राघव ढ़िग आवै ।
आत्म समर्पण करै चरण सेवन चित लावै ॥४६॥
तिनकी सार सम्हार करत सब बिधि रघुनन्दन ।
विपुल वाटिका बिपुल सुगृह मधि प्रभु जग वन्दन ॥४७॥
करत विनोद बिलाश बिबिधि बिधि रूप रसिक वर ।
सकल भोग सुख स्वाद देत नटवर सनेह घर ॥४८॥
अखिल भुवन सौभाग्य सदन सर्वेश सरल अति ।
सर्वाधार परेश प्रेम पूरक उदार मति ॥४९॥
यथा उचित सब सखिन करत रघुराज निहाला ।
देश सुकुल अनुरूप भोग्य सुख स्वाद रसाला ॥५०॥

उचित विभाग बनाय सबहिं अति सुखद निवासा ।
देत सखिन मन मोद भरत करि रास बिलासा ॥५१॥
दक्षिण नायक नवल अमल कल कमल समाना ।
नयन सुखद चित चैन दैन रसिकेश सुजाना ॥५२॥
जिमि निज राशि सुभेद चन्द्र सम सुखद सुहावन ।
सब नक्षत्र स्थान मध्य शशि प्रिय मन भावन ॥५३॥
तिमि पिय परम प्रवीन सकल सखियन की आशा ।
पूरन करत सनेह सहित करि बिपुल विलाशा ॥५४॥
सब अभिमत दातार परम रिझवार मधुरतर ।
राजकिशोर रसज्ञ रास रसिया नागर वर ॥५५॥
स्वयं आत्मा रमण काम हत पूरक कामा ।
कोटि काम कमनीय कान्ति हर रूप ललामा ॥५६॥
जिमि राकापति स्वयं कदा तारा गन पासा ।
जावत सहित सनेह हृदय भरि परम हुलासा ॥५७॥
तिमि रघुवर निज राग वेग बस वनितन पाहीं ।
जात चतुर चितचोर करत क्रीड़ा हर्षाहीं ॥५८॥
वे सब रमणी बृन्द आप की परम पियारी ।
पूरक सब अभिलाष रास रस सिन्धु बिहारी ॥५९॥
सज्जन सुखद सनेह सुधा सागर नागर वर ।
प्रीतम प्राण अधार रास रसिया उदार तर ॥६०॥
जिमि शशि तमकरि दूर सबनि को ताप नशावै ।
पूरित परम प्रकाश कुमुदिनी सुमन खिलावै ॥६१॥

तिमि रघुवीर सुजान तिमिर अज्ञान नशावत ।
पूरित ज्ञान प्रकाश स्वजन त्रय ताप मिटावत ॥६२॥
कामिनि कला निधान अनन्या रघुवर केरी ।
स्वसुख विकार बिहाय अमल पद प्रीति घनेरी ॥६३॥
लखि बिलम्ब कोइ सखी बदति विधु बदनी वयना ।
परम प्रणय बस कहै जाहु पिय तेहिं सखि ऐना ॥६४॥
अति कठोर नख मारि तुमहिं सुख स्वाद चखायो ।
सुकुमारता सुसीव सुतन मधि चिह्न बनायो ॥६५॥
गमनहु तासु समीप सकल संकोच बिहाई ।
रमण करहु सुख सहित वाहि रस सिन्धु डुबाई ॥६६॥
कछुन प्रयोजन मोहिं नाथ अति वेगि पधारो ।
लखि तव कोमल अंग लहति दुख हृदय हमारो ॥६७॥
अति कठोर नख चिह्न निरखि मम मन दुख भारी ।
जावो राज कुमार जहाँ रुचि होय तिहारी ॥६८॥
जे तव भक्त महान परम प्रेमामृत पागे ।
सेवत नित पद कंज सकल सम्पति सुख त्यागे ॥६९॥
होत बासना रहित बिषय से बिषय विरागा ।
नितनव तव पद कंज मंजु में मति अनुरागा ॥७०॥
फिर क्यों जीवन नाथ आप बासना न त्यागत ।
नवल नायिकन मध्य सतत अतिसय अनुरागत ॥७१॥
कोइ नागरी नवीन आप को अति सुखदाई ।
आदरणीया सतत रँगत वाके सँग जाई ॥७२॥

बढ़ति बासना बिपुल आप के हृदय मझारी ।
अजित कहावत आप स्वबस कोने सुकुमारी ॥७३॥
वाको पावन प्रेम प्रबल प्रीतम पद माहीं ।
तासु मनोरथ सकल भाँति पूजत पिय आहीं ॥७४॥
लहसुन जैसो चिन्ह आप के अमल अंग में ।
कज्जल की एक रेख लगाई रति उमंग में ॥७५॥
वशीभूत करि तुमहिं प्रेमयुत रमण करायो ।
रसिकेश्वर रस रूप प्रेम रस सिन्धु डुबायो ॥७६॥
कज्जल की बररेख आप के तन मधि सोहै ।
यह अतिसय सौभाग्य लाभ प्रीतम जिय जोहै ॥७७॥
हम सबको सर्पिनी जीभ सम ताप प्रदायिनि ।
प्रीतम अतिशय सुखद आपको परम रसायिनि ॥७८॥
यद्यपि कर्कश रहित तदपि हमको दुखदाई ।
मर्म सुछेदन करै नहीं याते सहिजाई ॥७९॥
हम सबको तजि बिपिन मध्य बाको सुखदीना ।
रमि रमाय सुख स्वाद लहेउ यह अति भलकीना ॥८०॥
सकल रैन जगि तासु संग करि बिपुल बिलाशा ।
दियो वाहि परितोष तोरि हम सब की आशा ॥८१॥
हम सब पूरी निशा आप की बाट निहारत ।
वितई हे रसिकेश दृगन सों सुचि जल ढारत ॥८२॥
कहिये बात बनाय प्रेम तुम में अधिकाई ।
पर पतियावै कौन निरखि तुम्हारी कुटिलाई ॥८३॥

वक्षस्थल में सखी उरज की मुद्रा राजति ।
हम सब को बिश्वास ताहि सब भाँति नसावति ॥८४॥
को करिहै विश्वास आप को राज दुलारे ।
इन्द्रिन बिबस लखात हमहिं सब बिधि सुकुमारे ॥८५॥
कहलावत अखिलेश अतीन्द्रिय परम सुजाना ।
आगम निगम पुरान अचल कहि करत बखाना ॥८६॥
मर्दत सखिन उरोज आप हिय में हर्षाई ।
राजकुँवर चितचोर यही है तब अचलाई ॥८७॥
इमि आक्षेप समेत करहिं उपहास सखीगन ।
प्रणय कोप की भेंट पाय प्रीतम प्रमुदित मन ॥८८॥
अन्य नायिका संग रमण के चिह्न लखाई ।
उनको पावन प्रेम बढ़ावत श्री रघुराई ॥८९॥
एक-एक को सुखी निरखि मन ईर्षा करहीं ।
तदपि छिपावहिं कोप मोद अपने उर भरहीं ॥९०॥
यद्यपि अस नहिं राम तदपि रस बर्धन काजा ।
करत केलि कमनीय सखिन सँग श्री रघुराजा ॥९१॥
कोइ नायिका एकान्त कुंज में पिय रुख पाई ।
मिलन हेत हर्षाय गई आनन्द समाई ॥९२॥
करि वाकी बांचना अपर सखि संग बिहारा ।
करि बहु हास बिलास मिले जब नृपति कुमारा ॥९३॥
तब वह नव नागरी नेह पागी खिसियाई ।
प्रणय कोप में भरी बचन यों बदति सुनाई ॥९४॥

अहो छलिन शिरताज राजनन्दन मन भावन ।
करनी कुटिल तुम्हार सबहिं निशि दिन ललचावन ॥९५॥
सुनि वाके वर बैन नैन करि सैन मैन मन ।
मोहन सकल जहान मान मर्दन प्रमोद घन ॥९६॥
पावत परमानन्द हृदय में अति रघुनन्दन ।
राजकिशोर रसज्ञ रास रसिया रस रंजन ॥९७॥
प्रेम दशा अति अकथ कोपहू सुख सरसाई ।
बचन प्रहार कठोर परम रसबोर लखाई ॥९८॥
यद्यपि राजकुमार तदपि अति निपुण गुणाकर ।
परकीया रति असति अवंचक परम सुघर वर ॥९९॥
श्री वशिष्ठ गुरु वेद शास्त्र आयसु शिरधारी ।
परदारा सँग रमण करत नहिं रास बिहारी ॥१००॥

दो० वहाँ न गमने रसिक वर, अपर नायिका पास ।
आये सीताशरण पिय, सो मन भई निराश ॥२॥

परहिंसादिक कर्म लोक मर्याद बचाई ।
करत न राजकुमार कदा रस निधि रघुराई ॥ १ ॥
दैव योग पर त्रिया रमण हित विनय सुनावै ।
लौटावत समुझाय वाहि रस स्वाद न पावै ॥ २ ॥
अपर पुरुष व्याहिता नारि लखि नवल निकाई ।
मधुर माधुरी पगीं बिना ही मोल बिकाई ॥ ३ ॥
अंग संग आलिंगनादि रति रमण बिहारा ।
चाहैं अतिरस मगन विनय करि बिबिध प्रकारा ॥ ४ ॥

Scanned by CamScanner

मधुर नरम परिहास युक्त बहु बचन बनाई ।
तिन को मन चित हरत नृपति सुत नेह जनाई ॥ ५ ॥
सुनि पिय बचन सनेह पगे अति आनँद पाई ।
अतिसय प्रेम विभोर रमण रति स्वाद भुलाई ॥ ६ ॥
येहि बिधि सुखी बनाय तासु अँग परसत नाहीं ।
गवनत सो मन मुदित हर्ष मानत मन माहीं ॥ ७ ॥
कबहुँक निज ऐश्वर्य ग्रहण करि राजकुँवर वर ।
सर्व स्वतन्त्र परेश प्रेम पूरित उदार तर ॥ ८ ॥
पूर्ण मनोरथ करत भरत मन मोद अपारा ।
करि बहु हास बिलास रमण रति बिबिधि प्रकारा ॥ ९ ॥
पुनि सो समय बिताय लोक की दृष्टि बचाई ।
राखत जग मर्याद राजनन्दन रघुराई ॥१०॥
कबहुँ सखिन के बैन सुनत हित राजकुँवर वर ।
मन्दिर लता निकुंज मध्य छिपि जात रसिक वर ॥११॥
कतहुँ असतरन् मध्य कदा त्रण माहिं लुकाई ।
सुनत सखिन के बैन हृदय में अति सुख पाई ॥१२॥
वीथी विमल बिशेष रैन मधि लता सघन अति ।
तहँ छिपि जात रसेश राजनन्दन निर्मल मति ॥१३॥
अब श्री सूत सुजान कहत सबको समुझाई ।
लखि लीला अति मधुर करहु शंका जनि भाई ॥१४॥
अघटित घटना पटीयसी पर तत्त्व परम गति ।
परब्रह्म अखिलेश वदत श्रुति शास्त्र महाँ मति ॥१५॥

सकल लोक अभिराम सर्बपति परम उदारा।
शक्तिमान सबभाँति सुहृद सब जगत अधारा ॥१६॥
अज अजीत अनवद्य अमल अविगत अविनासी।
परतम परम परेश प्रेम पूरति सुख रासी ॥१७॥
अमित अनीह अशेष अगुन गुन सागर नागर।
नृप किशोर चितचोर रास रसिया छवि आगर ॥१८॥
शतचित आनँद रूप सतत सब विश्व प्रकाशी।
प्राकृत लच्छण रहित बिचच्छण रास बिलाशी ॥१६॥
यद्यपि मदन महान स्वबस सब बिश्व बनाई।
तदपि निरखि रसिकेश मदन मद त्यागि लजाई ॥२०॥
सब बिधि स्वबस बनाय मनोजहिं राजकुँवर वर।
रमत रसिक शिरमौर राजनन्दन उदार तर ॥२१॥
मद मत्सर आमर्ष राग ईर्षा अरु कामा।
जीति सबहिं सब भाँति सतत बिलसत श्री रामा ॥२२॥
जासु कर्म सब दिब्य रहत जो सदा स्वतन्त्रा।
सर्वशक्ति सब ईश सदा जाके परतन्त्रा ॥२३॥
सोइ सर्वज्ञ परेश परम बलवान ज्ञान घन।
रमि रमाय सुख लेत देत सखियन प्रमोदमन ॥२४॥
प्राकृत नर इव निरखि महाँ कौतुक कमनीया।
सोचति मदन महान हृदय में अति रमनीया ॥२५॥
आज अजित को जीति रास में स्वबस बनायो।
नृप किशोर चितचोर सदा सर्वेश कहायो ॥२६॥

मदनातुर सोउ भये हर्षि सखियन सँग माहीं ।
प्राकृत मनुज समान केलि कौतुक दरशाहीं ॥२७॥
पर अति भोरो मदन हृदय में सोचि न पावै ।
सखिन प्रेमबश कुँवर मधुर लीला सरसावै ॥२८॥
अथवा परम स्वतन्त्र स्वइच्छा बस रघुराई ।
करत केलि कमनीय सखिन रस सिन्धु डुबाई ॥२९॥
अब वर्णत श्री सूत सुखद लीला हर्षाई ।
जेहि लखि मदन महान हृदय अभिमान बढ़ाई ॥३०॥
कोइ सुर सुता सुजान प्रेम मद घुर्मित नयना ।
नवल नायिका अमित कला कुशला सुख ऐना ॥३१॥
अतिसय सरस उदार चित्त चिन्ता कछु नाहीं ।
राजकिशोर रसज्ञ रमत बाके सँग माहीं ॥३२॥
रूपवती गुनवती परम रमनी छबि खानी ।
सरल शील सौहार्द भरी प्रीतम सुख दानी ॥३३॥
सो करि मान महान कलह रघुवर से करई ।
मद माती तिय भाव सहित आनँद हिय भरई ॥३४॥
यद्यपि चिन्ता रहित तदपि रस वर्धन कारन ।
पगी परम माधुर्य मान नहिं करै निवारन ॥३५॥
लीला सरस सनेह सनी हिय दृगन निहारी ।
हा पद देवत सूत वदत प्रिय बचन बिचारी ॥३६॥
अहो परम आश्चर्य अमल अनवद्य अगोचर ।
परम अचिंत्य महान राज नन्दन सर्वेश्वर ॥३७॥

करत केलि रस पगे सखी को रहे रिझाई ।
मणिन विभूषण देत स्वकर गहि रहे मनाई ॥३८॥
सो बाला रमनीय लेति नहिं शीश कपावै ।
नहिं लइहौं कहि वयन परम आमर्ष दिखावै ॥३९॥
लखि वाको अति कोप विनय करि शीश झुकाई ।
रिझवत लाल रसाल प्रेम लम्पट रघुराई ॥४०॥
जिमि हथिनी को देत कमल गज प्रेम बढ़ाई ।
सो नहिं लेइ सनेह सहित शिर रही कपाई ॥४१॥
करिनी सम सो प्रिया मत्त गत इव रघुराई ।
मणि भूषण जनु कमल देत पिय हिय हर्षाई ॥४२॥
सो नहिं लेति सनेह सहित पिय रहे मनाई ।
सुनि वर विनय रसाल सखी बोली इठलाई ॥४३॥
सब कामिन शिरताज राजनन्दन मन भावन ।
अपर नाइका पास गये क्यों ज्वाल जगावन ॥४४॥
मैं तुमको रसिकेश लेउँ निज अंग मिलाई ।
तब मोकहँ तजि नाथ कहाँ जइहो रघुराई ॥४५॥
मैं जननी सुरसदन रूप छवि निधि नव वाला ।
मेरे अधर पियूष पान करि परम रसाला ॥४६॥
मम नीवी को खोलि अमृत औषधि पिय पाई ।
बनी रही तन प्यास त्रप्त नहिं भये कदाई ॥४७॥
अपर नायिका सुछवि नीर सम पियत जाय पिय ।
रतन पिटारी त्यागि भरी अहि खोलि मोद हिय ॥४८॥

पावत जीवन प्रान आप सम को जग माहीं ।
है नहिं कबहूँ भयेउ कदा पुनि होना नाहीं ॥४९॥
मैं शुभ गुण गण खानि पिटारी रत्न भरित पिय ।
करत जाहि तुम प्यार भरी अवगुण जानिय जिय ॥५०॥
सुनिताके वर वैन प्राण प्रीतम उमंग भरि ।
गाढ़ालिंगन करत विरह नल हरत हास्य करि ॥५१॥
अरु श्री सुत उदार अन्य नायिका कहानी ।
बर्णत सहित सनेह हृदय में अति सुखमानी ॥५२॥
प्रेमवती कोइ सखी पिया को निज गृह माहीं ।
सब विधि राखी रोकि चलो वासे बल नाहीं ॥५३॥
चतुर शिरोमणि श्याम चले करि निज चतुराई ।
पीताम्बर तेहि पकरि रोकि राखे बरियाई ॥५४॥
और कहा हे प्राणनाथ तुम जगत विमोहत ।
सकल नायिकनि जीति कीर्ति लहि अतिसय सोहत ॥५५॥
तब वक्तस्थल माहिं लागि सो कीर्ति छुड़ाई ।
निजस्तन की घात देउँ तब मान भुलाई ॥५६॥
अखिल अबनि अवनीश मुकुटमणि चक्रवर्ति वर ।
तासु प्राण प्रिय पुत्र आप छबि निधि उदार तर ॥५७॥
सकल लोक गन्धर्वराज मम पिता कहावैं ।
मैं उन की आत्मजा भली बिधि तुमहिं छकावैं ॥५८॥
सुनि ताके वर वैन मैन मद मर्दन छबि धर ।
राजकुमार रसज्ञ रास रसिया प्रमोद घर ॥५९॥

बितई निशि तेहि संग रंग रस पगे लगे हिय।
विपुल बिनोद बिलास रमन रति बस प्यारी पिय ॥६०॥
करि वाको परितोष पोष सब बिधि रघुनन्दन।
प्रातःकाल निदेश पाय गमने अभिनन्दन ॥६१॥
तजि निज मान गुमान विजय अभिमान भुलाई।
"सीताशरण" सनेह सहित सखियन ढिग जाई ॥६२॥
लखि नागरी नवीन नेह माती रस मातीं।
पिय सों बोलीं बैन सैन युत अति इठलातीं ॥६३॥
कापि कामिनी मुग्ध वाहि बहु भाँति खिझाई।
बचन चातुरी सहित सखी सुख युत हर्षाई ॥६४॥
कहहिं सुनहु रघुवंश हंस अवतंश रसिकवर।
प्रीतम प्राण अधार प्रेम पूरित सुषमाकर ॥६५॥
यह कामिनि कमनीय केलि कुशला गुन खानी।
सब सुख स्वाद विधान करन हारी रस दानी ॥६६॥
यह मुग्धा अति मधुर भाव भूषित रमनीया।
तव सँग रति रस रमन करन इच्छा कमनीया ॥६७॥
अपर नायिका नेह पगी तव सुख अभिमानी।
जाके संग बिहार कीन पिय अति प्रिय जानी ॥६८॥
सो नवला निज रूप शील गुन गर्व बढ़ाई।
तिरस्कार नित करति याहि तर्जहिं खिझिआई ॥६९॥
पिय तुम परम प्रवीन सकल बनितन सुखदाई।
मन रंजन चितचोर वाहि रसचोर बनाई ॥७०॥

दीजै निज सुख स्वाद सतत परिकर सुखकारी।
दीन मीन सम वृथा नाथ जावै यह मारी ॥७१॥
हे अवनीश कुमार मार मद मथन सुछबि धर।
प्रीतम परम रसज्ञ रास रसिया उदार तर ॥७२॥
बिपुलेत्तणा अनेक राजकन्या रस रूपा।
तुमको जीवन प्राण प्राप्त अति अमल अनूपा ॥७३॥
ते सब अति सौहार्द भरी गुन शील उजागरि।
तव सुख हित रत रहहिं सकल अवला नव नागरि ७४॥
पर हे परम उदार प्राण जीवन धन प्यारे।
हम सब की गति एक आप ही राजदुलारे ॥७५॥
याते हे रसिकेश दिव्य तम अमल नेह धन।
दीजै दया निकेत प्रेम पूरक प्रमोद मन ॥७६॥
यह मम सखी सनेह सनी तव चरण सहारे।
तलफावत अति याहि उचित नहिं राजदुलारे ॥७७॥
जिमि गिरिकन्दर मध्य रहै तेहि धुआँ दिखाई।
पावै सो अति खेद दशा तिमि मोर बनाई ॥७८॥
निज बियोग सन्तप्त नाथ हम सब को कीना।
जीवन प्राण अधार यही सुख रस मोहिं दीना ॥७९॥
प्रथम आदरहि जाहि बहुरि तेहि आँख दिखावै।
तिय को मरण समान निरादर खेद बढ़ावै ॥८०॥
प्रथम न जेहि आदरै खेद सो तिय नहिं पावै।
जिमि जल सीतल तेल माहिं कछु हानि न लावै ॥८१॥

यदि कोइ तेल तपाय एक जल बिन्दु गिरावै ।
तो शीतल जल विन्दु अवसि दुख दाह बढ़ावै ॥८२॥
ऐसेहि पिय तुम प्रथम कीन सनमान हमारो ।
दै पुनि बिषम वियोग नाथ हमरो जिय जारो ॥८३॥
करत न जो सनमान प्रथम हे राजदुलारे ।
तो न होत दुख मोहिं सुनहु हे प्राण अधारे ॥८४॥
इमि प्रमदा गण विपुल वचन बोलहिं बिनोद भरि ।
अखिल मनोरथ दानि कान्त भल भाँति स्वबस करि ८५॥
जिमि श्रुति ब्रह्म निरूपि आतमा बोध करावैं ।
निज प्रतिपाद्य रसेश ब्रह्म को स्वपति बनावैं ॥८६॥
तिमि अति प्रेम विभोर बचन बहुविधि बिनीत कहि ।
स्वबस किये रसिकेश श्याम सुन्दर प्रमोद लहि ॥८७॥
अतिसय परमानन्द पगीं प्रमदा समुदाई ।
लखि प्रीतम मुख चन्द द्वन्द सब जात भुलाई ॥८८॥
निज जीवन सर्वस्व प्राण वल्लभ को जानत ।
अखिल लोक सुख स्वाद मुक्ति को त्रणसम मानत ॥८९॥
पिय जो चाहैं करहिं परम गति एक हमारे ।
तन मन धन प्रिय प्राण सबनि हम उन पर वारे ॥९०॥
इमि कहि बचन बिनोद भरे पिय को सुखदाई ।
ललना गन मन मुदित सकल प्रीतम ढिग जाई ॥९१॥
निज-निज भुजा विशाल ललकि पिय के गर डारी ।
गाढ़ालिंगन करत हृदय पावत सुख भारी ॥९२॥

पुनि पगि प्रेम प्रमोद परम प्रमदा समुदाई ।
गहि पिय को कर कंज मंजु पर्यंक बिठाई ॥९३॥
निज-निज रुचि अनुसार सकल बनिता मृग नयनी ।
पिय सँग हास विनोद करहिं कल कोकिल वयनी ॥९४॥
सब की रुचि अनुकूल प्राण वल्लभ रस रासी ।
करत केलि कमनीय कला कल कुशल विलासी ॥९५॥
तत्क्षण खिले सजीव सरस राजिव दल लोचन ।
करुणा कृपा अगार मार मद हर भव मोचन ॥९६॥
रूप अनूप अपार निरखि ललना गन सारी ।
पावहिं परमानन्द हर्षि होवत वलिहारी ॥९७॥
भाव भरीं नागरी परम रस बस सुकुमारी ।
पिय मुख कंज निहारि हृदय सकुचहिं सब प्यारी ॥९८॥
रति रस लम्पट लाल सखिन रुचि जानन हारे ।
परम रसिक शिरमौर राजनन्दन सुकुमारे ॥९९॥
सबनि मनोरथ जानि सबहिं निज निकट बुलाई ।
देत परम सनमान चितय चित लेत चुराई ॥१००॥

दो०—यहि विधि सब नव नागरी, नेह भरीं एक साथ ।
भेटहि सीताशरण हँसि, गावहि पिय गुन गाथ ॥३॥

यद्यपि सब कामिनी सरस सौरत सुख चाहहिं ।
अतिसय आरत भईं तदपि लज्जा निर्वाहहिं ॥ १ ॥
यद्यपि ललना ललित सकल रति रस अभिलासी ।
तदपि लाज वस भईं जनावहिं परस उदासी ॥ २ ॥

पिय को रति रस देन हेत कोउ उद्यत नाहीं ।
यद्यपि प्रीतम प्रेम पगीं प्रमुदित मन माहीं ।। ३ ।।
यद्यपि पिय बलवान करत बहु भाँति उपाई ।
तदपि सखिन रुचि बिना सरस रति रस नहिं पाई ।।। ४ ।।
सोचहिं सखी समूह निशा बीतै अधिकाई ।
करि मज्जन जल पान ललित श्रृंगार सजाई ।। ५ ।।
तव प्रीतम चितचोर काहिं स्थिर रति देवैं ।
रमि रमाय पिय संग अंग अंगन रस लेवैं ।। ६ ।।
इमि सब सखी समूह हृदय में करहिं विचारा ।
उत पिय चित चटपटी लगी लखि नृपति कुमारा ।। ७ ।।
करि कटाक्ष कमनींय लखत नवलन तन ओरी ।
मन्द-मन्द मुसुकाय लेत सब को चितचोरी ।। ८ ।।
पिय की रुचि में सकल चहहिं निज मनहिं मिलाई ।
चाहत राजकुमार सबनि निज हिय लपटाई ।। ६ ।।
करि कटाक्ष हँसि हेरि स्वबस मन करि पिय प्यारे ।
पावत परम प्रमोद राजनन्दन सुकुमारे ।। ६ ।।
उनके भूषन बसन सरकि अंगन से आये ।
मुख पर लट लहरात बदन बिधु बिमल सुहाये ।।१०।।
लखि पिय की चातुरी सकल नायिका लजानी ।
अंग राग तन छुटेउ व्यग्र चित हिय सकुचानी ।।११।।
तदपि हृदय धरि धीर पियहिं रति रस नहिं देहीं ।
नवल नायिका बृन्द परीक्षा पिय की लेहीं ।।१२।।

तब बोले पिय बैन बिमल बिधु बदन निहारी ।
सुनहु सहचरी सकल मोहिं प्राणहुँ ते प्यारी ॥१३॥
ऐ ममप्रिया समूह कला कुशला प्रवीन अति ।
हम हारे सब भाँति पगी उज्वल रस मन मति ॥१४॥
तुम सब करि अति कृपा मोहिं सुख स्वाद चखाओ ।
वन्दौं चरण सरोज विहँसि निज कण्ठ लगाओ ॥१५॥
सखिन चरण तल अंक अमल पिय भाल सुहायो ।
निरखि सकल नायिकन हृदय अति आनँद पायो ॥१६॥
बोलीं बचन विनोद बलित सब सुमुखि सुनयनी ।
ताली दै हँसि कहहिं पिया सो कोकिल वयनी ॥१७॥
अहो चपल चितचोर चतुर चूड़ामणि छविधर ।
राजकिशोर रसज्ञ रास रसिया सनेह घर ॥१८॥
विपुल बार बहुभाँति प्रशंसा अपनी कीना ।
बड़े बीर के राजकुँअर हम सब भल चीना ॥१९॥
कहहु लाल तब कला सकल कहँ गईं छिपाई ।
कहत रहे चातुरी सबनि की दिहौं भुलाई ॥२०॥
सो पिय तव चातुरी गई कहँ हमैं बताओ ।
रसिक राज शिरताज हृदय में जनि सकुचाओ ॥२१॥
आसय अमल अगाध भरी नव नेह सुबानी ।
बचन भरे परिहास सुनत रघुवर सुख मानी ॥२२॥
कोइ विधु बदनी बाल बचन बोलति मुसुकाई ।
सुनिये राज किशोर प्रीति वर्धक सुखदाई ॥२३॥

तब वीरता सुचिह्न भाल में अति छबि छावत ।
सखिन चरण को अंक अमल अति सुषमा पावत ॥२४॥
यहि बिधि बहु उपहास्य करहिं सब सखी सयानी ।
ताली मुदित बजाय हँसहिं अतिसय सुखमानी ॥२५॥
ताली बाजत समय सखिन कर कंकण बाजत ।
शब्द सरस मन हरन सुनत प्रीतम सुख पावत ॥२६॥
मानो कंकण ललित सखिन की गिरा सुहाई ।
निज स्वर से करि सही अलिन मन मोद बढ़ाई ॥२७॥
प्रीतम परम प्रवीन प्रियन की प्रीति सुपावन ।
लज्जा युत सकुचाय मोद मानत मन भावन ॥२८॥
लखि यह लीला ललित कलित श्री सूत सुजाना ।
कहत अहो आश्चर्य महाँ नहिं जात बखाना ॥२९॥
श्री अनन्त सम्पन्न चक्रवर्ती नरेश सुत ।
राजकुँवर सुकुमार मार मद मथन नेह युत ॥३०॥
जाके चरण सरोज काहिं सुर नर मुनि देवा ।
वन्दत नित त्रयदेव इन्द्र चाहत नित सेवा ॥३१॥
परतम परम परेश ब्रह्म व्यापक प्रकाश निधि ।
अमित अपार अनन्त खड़ी कर जोरे ऋधि सिधि ॥३२॥
सर्व समर्थ उदार एक अति अमल गुणाकर ।
परमानन्द रसेश स्वयं सुख सागर छबिधर ॥३३॥
यद्यपि अस रघुवीर तदपि अवलन बश कीने ।
प्रेम युद्ध में हार मानि मुग्धन सुख दीने ॥३४॥

प्रगट अनादर भरे बचन उपहास्य सुनावैं ।
तदपि रसिक रस दान हृदय में अति रस पावैं ॥३५॥
प्रेम बिबर्धक क्रिया सखिन की लखि रघुनन्दन ।
पावत परमानन्द अलिन मन आनँद कन्दन ॥३६॥
जो सब भाँति स्वतन्त्र प्रेम परतन्त्र रसाला ।
परब्रह्म परमीश स्वजन मन हरन कृपाला ॥३७॥
सुनत सखिन के बैन परम आनन्द समाये ।
राम सच्चिदानंद कंद हिय अधिक लजाये ॥३८॥
सखिन लखे रसिकेश प्राणवल्लभ सकुचाने ।
सब नायिका नवीन नेह भरि पिय सनमाने ॥३९॥
कलित कपूर समान स्वच्छ स्फटिक मणिन मय ।
चितवत चित चख चोरि लेत चौकी प्रकाश मय ॥४०॥
तापर आदर सहित अलिन पिय को पधरायो ।
सुरभित तेल फुलेल सुतन मलि मोद बढ़ायो ॥४१॥
नारायण वर तेल कलित केशर कपूर बर ।
हरिचन्दन को चूर्ण चिरौंजी आदि सरसतर ॥४२॥
उबटत पिय को अँग रंग अंग अंगन छायो ।
परसत प्रमदा प्रेम पगीं मन्मथ उमगायो ॥४३॥
करवाई स्नान सबिधि सखियन रघुबर को ।
करि कौतुक कमनीय हास्य युत श्री छबिधर ॥४४॥
बहुरि अंग अँगुछाय अमल वर बसन सुहाये ।
पहिरावत हर्षाय पियहिं सखियन सुख पाये ॥४५॥

नख सिख ललित शृंगार नवल ललनन सजवायो ।
रूप अनूप विलोकि कोटि शत मदन लजायो ॥४६॥
निज-निज रुचि अनुसार अलिन पिय सुछबि सजाई ।
कुंज कुंज में प्रथक प्रथक रस प्रेम बढ़ाई ॥४७॥
अन्न चतुर्बिधि मधुर अपर पकवान अपारा ।
मेवा अमित अनेक फलन रस सुकर सुधारा ॥४८॥
पगि प्रीतम के प्यार पबाबहिं सखी सयानी ।
"सीताशरण" सनेह सनी कोउ भेद न जानी ॥४९॥
दै पिय के गलबाहँ स्वकर सखि पियहिं पवावैं ।
निरखहिं हँसि अनुराग पगीं दृग दृगन मिलावैं ॥५०॥
प्रीतम परम प्रवीन चूमि कर अति सुख पाई ।
पावत प्रेम प्रमोद पगे करि विपुल बड़ाई ॥५१॥
पिय अधरामृत मिलित प्रसादी पाय अलीगन ।
लहि प्रीतम को प्यार सकल राजी प्रमोद मन ॥५२॥
यहि विधि राजकिशोर परम रस बोर सुछवि धर ।
राजत राजकुमार मार मद मथन नेह भर ॥५३॥
चन्दन लेपित अंग मार्मिक मयन ताप हर ।
सुन्दर सुमन सुमाल सुशोभित सरस मधुर तर ॥५४॥
स्वर्ण रत्न मणि जड़ित आभरन अमल सुहाये ।
पहिरि लसत चित चोर चपल चितवत मुसुकाये ॥५५॥
सुचि सौरभ सम्पन्न सुआसव बिबिधि प्रकारा ।
निजकर सखीं पियाय लहैं सुख स्वाद अपारा ॥५६॥

अति ऊँचे स्कन्ध सुभग आयत उर सोहैं।
भूषण युत आजानु बाहु निरखत मन मोहैं ॥५७॥
चक्रवर्ति महराज अखिल अवनीश कहावैं।
सुयश उदार अपार सकल सुर नर मुनि गावैं ॥५८॥
तिनके सुठि सुकुमार तनय सुन्दर सनेह घर।
स्वजन सुखद गुन धाम राम अभिराम हृदय हर ॥५९॥
चहुँदिशि अलीं अपार कला कुशला नवीन वय।
प्रीतम प्रीति प्रतीति पगीं गुन निधि सुशील मय ॥६०॥
तिन सहचरिन समाज मध्य राजत रघुनन्दन।
कलित कामिनी काम कला पूरक मन रंजन ॥६१॥
क्षीर सिन्धु के फेन सदृश सिंहासन सुचितर।
कोमल अमल अनूप शुभ्र मनहरन सुघर बर ॥६२॥
तामधि सहित सनेस सखीं पिय को पधराई।
सेवहिं चरण सरोज हृदय में अति हुलसाई ॥६३॥
ललना गन कमनीय परम रमनीय सु वयनी।
ललित भौंह कटि सूक्ष्म कला कुशला मृगनयनी ॥६४॥
सकल नायिकन मध्य सुखासन लसत रसिक वर।
देत सबहिं सुख स्वाद परम अह्लाद उमगि उर ॥६५॥
यहि बिधि पिय के पास सकल सहचरी सयानी।
विलसहिं बिपुल बिनोद भरीं अद्भुत रस खानी ॥६६॥
गावहिं गीत सनेह सहित प्रीतम गुण गाथा।
बचन मधुर मन हरन सरसतर सुनि रघुनाथा ॥६७॥

पावहिं परमानन्द सखिन रस सिन्धु डुबावत।
नृपकिशोर चितचोर अलिन सँग रमत रमावत ॥६८॥
दै सब को सुख स्वाद राजनन्दन हर्षावत।
प्रीतम परम रसज्ञ चोरिचित मृदु मुसुकावत ॥६९॥
पुनि बिधु बदनी बाल विनय करि पियहिं उठाई।
अपर वाटिका मध्य प्यार युत गईं लिवाई ॥७०॥
तहँ सब सहित सनेह पिया सँग विहरन लागीं।
नवल नायिका वृन्द प्राणधन पद अनुरागीं ॥७१॥
नैन सैन संकेत करहिं मन हरन नागरी।
चाहत पिय सँग रमन करन क्रीड़ा उजागरी ॥७२॥
तेहि क्षण कोइ एक सखी दूर कुन्जन में जाई।
मधुर सरस मन हरन गीत गायो सुखदाई ॥७३॥
भरेउ परम शृंगार मदन संचारन हारो।
पवि सम हृदय मझार प्रेम उपजावन वारो ॥७४॥
सुनत रुक्षता दूरि होय चित सरस बनावै।
प्रीतम प्राण अधार हृदय को स्वबस बनावै ॥७५॥
राजिव नयन विशाल लाल सुनि अति सुखपाई।
रति रसज्ञ अति विज्ञ श्याम सुन्दर हर्षाई ॥७६॥
गान कला कल कुशल भाव ग्राहक रघुनन्दन।
वाको आशय जानि भये प्रमुदित मन रंजन ॥७७॥
भये प्रसन्न सनेह बिबस परिकर सुख कारी।
तासु प्राप्ती हेत चपल चित रास विहारी ॥७८॥

तजि आसन उठि चले चतुर चूड़ामणि मन हर।
राजकुँवर रस रँगे पगे प्रणयी विनोद घर ॥७९॥
बदत विमल वर बयन सखिन बिधु बदन निहारी।
बूझत सहित सनेह रमन रस रतन बिहारी ॥८०॥
दीजै मोहिं बताय सकल तुम परम सयानी।
उत्तम गीत रसाल कौन गावति रस खानी ॥८१॥
इंगित विज्ञ रसेश प्रीति भाजन तेहि जानी।
श्री पद्मा जी मधुर बचन बोलीं रस सानी ॥८२॥
जाको चिन्तन करत प्राण वल्लभ अकुलाई।
शरद सुऋतु नायिका रूप धरि के बन छाई ॥८३॥
गावति गीत रसाल लाल मन मोद बढ़ावन।
श्रवण सुखद रस भरित परम पावन मन भावन ॥८४॥
सुनि पद्मा के वयन सयन दै रूप रसिक वर।
रास रंग की चाह भरे गमने उदार तर ॥८५॥
संग सु नयनी सखीं होहावैं सुमुखि सयानी।
नवल नायिका मध्य लसत नटवर सुख मानी ॥८६॥
विपिन विचित्र निहार परम छबिदार सु तरु वर।
फल प्रसून सम्पत्ति सजे बिलसत बिशेष तर ॥८७॥
लटकहिं लता ललाम सु तरु पर जनु वितान वर।
सरसत लता निकुंज मन्जु मन हरन शान्ति कर ॥८८॥
सब तरु पादप लता गुल्म फल फूल समेता।
निज निज सम्पति सजे निरखि मन होत सचेता ॥८९॥

फल भारन नमि विटप भूमि परसत हर्षाई ।
जिमि सद्गुण लहि सन्त नमैं बुध विद्या पाई ॥९०॥
पादप पंक्ति अनूप निरखि मन अति सुख पावैं ।
कोकिल कीर मयूर मंजु विचरत मन भावैं ॥९१॥
सम्पति सकल सजाय शरद ऋतु हिय उमगाई ।
पिय को दर्शन पाय हृदय में अति सुख पाई ॥९२॥
पिय के दर्शन हेत विरह नल जो जिय जागी ।
साजन सन्मुख होत सर्वथा सो सब भागी ॥९३॥
पायेउ मोद महान वर्णि सो कौन सुनावै ।
सोइ जानै गुरु कृपा कोर ते जो कोइ पावै ॥९४॥
देखत राजकिशोर विपिन सम्पति हर्षाई ।
निज सहचरिन समाज सुखद लखि पिय मन भाई ॥९५॥
श्रेष्ठ चमेली पंक्ति कुमुद प्रफुलित चहुँ ओरी ।
चहुँ विधि वनज सुमंजु ललित विकसित रसबोरी ॥९६॥
सुचि सुगन्ध युत तेल भरित दीपावलि सोहत ।
लसत मसाल बिशाल चन्द्र प्रतिभा मन मोहत ॥९७॥
भू अकाश दिशि विदिशि चाँदनी लसति सुहावनि ।
छहरति छटा अनूप निरखि परिकर मन भावनि ॥९८॥
दिवस सरिस लखि परै निशा को भान न आवै ।
विहरत बिपुल बिहार भरे पिय सखि मन भावै ॥९९॥
श्रम बस खग दिन जानि निशा में बदत बचन बर ।
आशिर्बाद पुनीत सुनत उमगत प्रमोद उर ॥१००॥

दो०-ललित लता लावन्य युत, लहरत सुषमा ऐन ।
विहरत सीताशरण नित, सखियुत राजिव नैन ॥४॥

इमि बन सम्पति लखत रसिक नागर प्रवीन तर ।
मूर्ति वती ऋतु शरद तहाँ आई सनेह भर ॥ १ ॥
नृप कुमार ढिग जाय कान लगि विनय सुनाई ।
हे रसिकेश उदार कृपा मूरति रघुराई ॥ २ ॥
तव पद पंकज देखि मनोरथ सकल हमारे ।
पूरण हों सब भाँति कृपा करिये सुकुमारे ॥ ३ ॥
व्यर्थ न एकौ होइ यही वर विनय हमारी ।
सुनिये सुन्दर श्याम सजन रस रास विहारी ॥ ४ ॥
परम विलक्षण शक्ति आप की हे रसिकेश्वर ।
अखिल लोक अभिराम मधुर रस निधि हृदयेश्वर ॥ ५ ॥
सबकी रुचि नित रखत भाव ग्राहक नव नागर ।
कृपासिन्धु सौहार्द भरे सुषमा सुख सागर ॥ ६ ॥
शर्द सु ऋतु कमनीय परम रमनीय सुहावनि ।
पावन परम प्रदेश प्रेम रस निधि उमगावनि ॥ ७ ॥
नव किशोर रसबोर सखिन चितचोर रसिक वर ।
राजत राजकुमार मार मद मथन सुछबि धर ॥ ८ ॥
करि निज केलि कलोल काम सब पुरुष नशाये ।
रसिकेश्वर छवि निरखि कोटि शत मदन लजाये ॥ ९ ॥
सखी अनन्त अनूप अखिल सौंदर्य सुशोभित ।
करत अखण्ड विहार विपुल विधि पिय मनलोभित ॥१०॥

तदपि परम रस सार मधुर सुकुमार मोदघर।
काम बिबस नहिं होत नवल नागर प्रवीन तर ॥११॥
अमित कोटि गन्धर्ब कुमारन अंग रमाई।
दायक काम सु स्वाद लसत नटवर रघुराई ॥१२॥
अखिल जगत मन हरन श्याम सुन्दर किशोर वर।
रूप राशि सुख सदन परम अभिराम नेह घर ॥१३॥
रूप अनूप अपार निरखि जग को नहिंमोहै।
अबलन की गति कवन पुरुष मोहै जो जोहै ॥१४॥
स्वर्णरत्न मणि जटित हीर सिंहासन ऊपर।
शोभित राजकुमार मनहुँ राजत निशेश वर ॥१५॥
मुख माधुरी अपार छटा छहरति चहुँ ओरी।
रासस्थल मधि लसहिं नागरी नवल किशोरी ॥१६॥
सकल कला गुण धाम राम रमनी मन हरनी।
सेवहिं चरण सरोज सतत प्रीतम बस करनी ॥१७॥
निरखि सखिन भरि मोद श्याम सुन्दर प्रवीन मति।
बोले बचन सनेह सने रस भरे मधुर अति ॥१८॥
निज निज यूथ समेत सखी सब हिय हर्षाई।
रासस्थली मझार सकल बैठींय सुख पाई ॥१९॥
यहि विधि यूथ बनाय आर्यनन्दन रघुनन्दन।
राजत सहित सनेह अखिल परिकर मन रंजन ॥२०॥
ज्ञाता रसिक नरेश वेष मन हरन मधुर तर।
आश्रित मानद सतत स्वजन मन सुख सनेह कर ॥२१॥

सकल सहचरी करत केलि श्रम खेद न पावैं।
रासरंग रसमाहिं अधिक आनन्द बढ़ावैं ॥२२॥
याते परम प्रबीन चतुर चूड़ामणि रघुवर।
आसब पान कराय स्वकर सखियन प्रमोद भर ॥२३॥
राजत राजकिशोर सिंहासन अति उमंग भर।
गावहिं सखी सनेह सनी प्रीतम सुख तत्पर ॥२४॥
सकल नायिका बृन्द रास मण्डल बिरचित वर।
यूथ यूथ मिलि गान करहिं प्रमुदित सु प्रेम भर ॥२५॥
गान कला कल कुशल केलि कौशल युत कामिनि।
गावहिं आत्म बिभोर रसिकमणि मन अभिरामिनि ॥२६॥
मधुर मनोहर सरस सुनत श्रवणन सुखदाई।
सुनि सुन्दर सुकुमार सजन बहु करत बड़ाई ॥२७॥
रासस्थली अनूप रूप अद्भुत प्रकाश कर।
चमकत चारु सुरत्न मणिन बिरचित सु भूमि वर ॥२८॥
स्वच्छ सुभग स्फटिक मणिन रचि रुचिर सँबारी।
लसत ललित दीवार मनहुँ शशि किरन पसारी ॥२९॥
मण्डप रास बिलोकि मदन मद गयेउ हिराई।
हो बिरक्त बनि दीन रास लखि हिय सकुचाई ॥३०॥
नूतन नेह निकेत नायिका नवल नागरी।
प्रीतम प्रीति प्रमोद पगीं पति व्रत उजागरी ॥३१॥
पहिरे स्वेत सु बस्त्र सुमणि मुक्तन के भूषन।
धारण किये सु अंग अंग में हत सब दूषन ॥३२॥

कुन्द मालती जुही केर सुन्दर वर माला।
बिरचित विबिधि प्रकार किये धारण सब वाला ॥३३॥
जिनहिं देखि अस लगत मनहुँ पय सिन्धु तरंगैं।
गहे परस्पर हाथ नटहिं हिय भरत उमंगैं ॥३४॥
लखि पिय रूप अनूप परम आनन्द समाई।
करि कटाच्छ कमनीय कला कुशला मुसुकाई ॥३५॥
हृदय भव्य भावना भरी तन सुरति भुलाई।
गावहिं गीत रसाल लाल सुनि हिय ललचाई ॥३६॥
चितवत चंचल चखन चतुर चितचोर रसिक वर।
पावत परम प्रमोद राजनन्दन उदार तर ॥३७॥
आवत लखि सौभाग्य वान जिमि दीन लजाई।
हतभागी दुरि जाय तासु सन्मुख नहिं जाई ॥३८॥
मणि भूषण वहु ललित लसत अति दिव्य प्रकाशा।
सुनत शब्द सुख भरे भयो निद्रा कर नाशा ॥३९॥
नृत्यहिं सखी सनेह सनी श्रम नींद न आवै।
अति बिकसित मुख कंज मंजु सुषमा उमगावै ॥४०॥
सखि मुख कमल सुगन्ध सरस छाई चहुँ ओरी।
बन उपबन भरि रही वाहि वरनै कबि कोरी ॥४१॥
सौरभ मधुर उड़ाय पवन बन में संचारी।
अद्भुत रास बिलास समय लीला बिस्तारी ॥४२॥
सरस सु सौरभ पाय सकल भ्रमरावलि जागी।
प्रथम रास स्वर सुनत सबनि की मति रस पागी ॥४३॥

करि सौरभ संचार मनहुँ अलि पवन जगाये ।
लहि सुगन्ध सुचि सरस रास मण्डप में आये ॥४४॥
करत मधुर गुन्जार सुनत प्रिय सुखद सरस तर ।
रति रस वर्धन हार परम रमनीय हृदय हर ॥४५॥
रास मण्डप भरि पूरिरहेउ उमगेउ चहुँ ओरी ।
भू मण्डल आकाश स्वर्ग ब्यापेउ रस बोरी ॥४६॥
बाजत सरस मृदंग मधुर मानहुँ गर्जत घन ।
स्वर सुनि हिय हर्षाय लगे बोलन मयूर गन ॥४७॥
मनहुँ मयूर प्रसन्न सखिन की करत बड़ाई ।
अहो धन्य यह बाल बधू जिन सँग रघुराई ॥४८॥
करहिं केलि कमनीय स्वयं रमि तिनहिं रमाबत ।
"सीताशरण" सुजान शम्भु अज भेद न पाबत ॥४९॥
ऋषि मुनि सिद्ध गणेश शेश कोउ पार न पावैं ।
प्रकृति पार परमीश जाहि श्रुति शास्त्र बतावैं ॥५०॥
यह रस रास रसाल अमल अनवद्य एक रस ।
पीवत सहित समाज सखी प्रीतम जिन के बस ॥५१॥
अस निज मन अनुमान मोर गन हिय उमंग भर ।
करत प्रशंसा भूरि वदत बर बचन सरस तर ॥५२॥
स्वर युत राग रसाल सुनत मणि धर बहु अहि गन ।
बिलसे बाहर आय लिये मणि शिरनि मुदित मन ॥५३॥
जहँ तहँ करहिं प्रकाश अमित सुषमा दर्शाई ।
मानहुँ ललित मशाल पार्षद रहे दिखाई ॥५४॥

रासोत्सव आनन्द उमगि धायो चहुँ ओरी ।
मृगा मृगी सुनि नाद प्रेम बश भये बिभोरी ॥५५॥
गान तान रस खान मधुर गम्भीर रसाला ।
स्वर सुनि खग मृग बृन्द खड़े रस लहत बिशाला ॥५६॥
जिमि सुठि सन्त पुनीत हृदय प्रेमामृत भीने ।
रास रसिक गुरु कृपा कोर सुख लहत नवीने ॥५७॥
ध्यावत जब रस रास देह सुधि जात भुलाई ।
तिमि ठाड़े मृग बृन्द बिपुल तन सुधि बिसराई ॥५८॥
अमित नायिकन मध्य पुरुष एक राम रसिकवर ।
अन्य पुरुष न प्रवेश होय जहँ रमत सु छबि धर ॥५९॥
परम चतुर सामर्थ वान सर्वज्ञ उदारा ।
वांच्छित फल दातार एक रघुवंश कुमारा ॥६०॥
रति रस रमण सुजान मानमद हर रघुनन्दन ।
सतत स्वजन सुख दान सकल परिकर मन रंजन ॥६१॥
सकल कामिनी काम केलि पूरक प्रवीन तर ।
"सीताशरण" अधार प्यार वर्धन सनेह घर ॥६२॥
यदि कोइ संका करै व्योम देखत सब लीला ।
सावधान हो सुनहु सरस रस रास रसीला ॥६३॥
जिमि सहस्र दृग इंद्र अमित तारा गन अम्वर ।
लखत केलि कमनीय तदपि नहिं दोप न कछु डर ॥६४॥
जैसे व्यापक पवन सबनि अँग परसत जाई ।
अंग परस को दोप न काहुहिं लागत भाई ॥६५॥

तैसे ही आकाश आदि देखत नहिं दोषा ।
व्यापि रहेउ सर्वत्र व्योम तेहि हेतु अदोषा ॥६६॥
नटहिं नागरीं नेह नमित नूतन उमंग भर ।
गावहिं गीत रसाल मधुर मन हरन मंजु वर ॥६७॥
खसि खसि भूषण बसन गिरत तन सुरति बिसारी ।
चंचल चपला सरिस सखी चमकहिं सुकुमारी ॥६८॥
चोटी शिर से पृष्ठ भाग हो चरण कमल तल ।
लोटति नागिनि नेह भरी मानहुँ अनूप थल ॥६९॥
अथवा शिखर सुमेरु उपर कोउ नाग सुता वर ।
शोभित सुषमा सदन करति क्रीड़ा उमंग भर ॥७०॥
सारी ललित ललाम चन्द्र सम स्वच्छ सुहावन ।
तापर बेनी लसति निरखि पिय मन ललचावन ॥७१॥
रासोत्सव पांडित्य पूर्ण शोभित मन भावन ।
लखि ब्रह्मादिक चकित होत सुठि सुखद सुहावन ॥७२॥
रचना रची अनूप अकथ को कवि कहि पावै ।
नृत्यहिं नव नायिका निरखि पिय हिय उमगावै ॥७३॥
कामिनि कला प्रवीन सुकटि अति शूक्ष्म मोद घर ।
निरखत लाल रसाल परम आनन्द भरत उर ॥७४॥
यद्यपि पतली कमर तदपि पिय भय नहिं मानत ।
ये सब रमणी दिव्य रसिक चूड़ा मणि जानत ॥७५॥
भय माया कृत होहिं डरहिं पिय टूटन काजा ।
सकल सार की सार अलीं जानत रघुराजा ॥७६॥

नृत्य भेद पण्डिता एक मृग नयनी वाला ।
प्रीतम प्रेम बिभोर कामिनी रूप रसाला ॥७७॥
बेनी श्रेष्ठ ललाम पीठि ऊपर अति राजत ।
मानहुँ किचुली रहित कृष्ण सर्पिशी सुछाजत ॥७८॥
स्वर्ण लता अवलम्ब लीन मानहुँ वर नागिनि ।
लहरति शिर से भूमि चूमि बिलसति सौभागिनि ॥७९॥
मणि मुक्तन की माल जाल सखि विरचि सजाई ।
मानहुँ नागिनि मणि प्रकाश अर्पति हर्षाई ॥८०॥
सरस रास रस माहिं जासु मन नहिं अनुराग्यो ।
जगत बिषय बासना प्रवल वाही में पाग्यो ॥८१॥
वाकी बिषय बिकार भरी बुद्धी को खाई ।
करि बिकार सब दूरि देति चैतन्य बनाई ॥८२॥
जाको मन रस पगो वाहि दै दिव्य प्रकाशा ।
नित्य अमल सुख धाम हृदय में करत बिकाशा ॥८३॥
कोइ इक मध्या सखी कमल नयनी मन हारी ।
पिय रति रस दातार परम रमनी सुकुमारी ॥८४॥
नृत्यति अति अनुराग स्वेद कण मुख पर सोहत ।
आलस बस झुकि जाति निरखि प्रीतम हँसि जोहत ॥८५॥
प्यार भरी पिय दृष्टि पाय प्रेमामृत सानी ।
हुलसित हिय उमगाय अंक बैठी सुख मानी ॥८६॥
प्रीतम प्राण अधार ललचि निज कण्ठ लगाई ।
स्वकर पोछि श्रम स्वेद बिन्दु दृग दृगन मिलाई ॥८७॥

पावत परमानन्द प्रेम पूरक रघुराई ।
सखी सनेह समेत अधर रस पियत सिहाई ।।८८।।
नव नितम्बिनी सकल कला गुण रूप उजागरि ।
काम केलि कल कुशल कान्त मन हर वर नागरि ।।८६।।
नृत्यति कोइ नायिका निरखि पिय करत बढ़ाई ।
सो सखि हिय सकुचाय चरण बन्दत सुखपाई ।।६०।।
कोइ प्रिय प्रिया प्रवीन प्राण वल्लभ सु प्राप्ति हित ।
कामुक कामिनि काम केलि कल कुशल सरस चित ।।६१।।
रूपवती गुणवती सखी कोइ परम सयानी ।
मन प्रसन्न रमणीय सजन उर आनँद दानी ।।६२।।
यहि बिधि सब नायिका परम रस सिन्धु समाई ।
पिय गुण शील स्वभाव रूप माधुरी निकाई ।।६३।।
बदहिं बिमल वर वयन बिसद बिधु बदनी वाला ।
सुठि सुशील सुन्दरीं सकल सुख सदन रसाला ।।६४।।
कोइ नायिका नवीन नेह युत सरस मधुर वर ।
गावति गीत प्रवीन प्रणयनी हिय उमंग भर ।।६५।।
सुनि वाको वर गान गीत माधुरी पान करि ।
परम विमोहित भये अंग सब शिथिल मोद भरि ।।६६।।
अपर नायिका अंश भुजा धरि राज दुलारे ।
जड़वत स्थित भये एक क्षण अति सुकुमारे ।।६७।।
अद्भुत रूप बनाय लसत आनन्द कन्द पिय ।
रमि रमाय सुख लेउँ देउँ अस रुचि कीनी हिय ।।६८।।

कोइ नायिका प्रवीन पिया मन की रुचि जानी।
विनय करी कर जोर सुनहु रस निधि सुख दानी ॥९९॥
रसिक राज शिरताज आपहू राग तान वर।
गाइय सहित सनेह हृदय में अति उमंग भर ॥१००॥

दो०-प्रीतम हिय सुख वर्धिनी, रूप शील गुन सार।
सीताशरण सनेह घर, पिय उर की सुठि हार ॥५॥

सुनि वाकी वर विनय बिमल वर बदन रसिक वर।
अखिल कामिनी काम कला पूरक सनेह घर ॥ १ ॥
काम केलि कल कुशल काम नाशक उदार तर।
प्रीतम परम प्रवीन प्रेम पूरक सुषमा घर ॥ २ ॥
श्री कौशल्या अंब अंक आमोद बढ़ावन।
अचल अमल आनन्द कन्द परिकर मन भावन ॥ ३ ॥
शुभ्र चाँदिनी चारु चहूँ दिशि चमकति प्यारी।
मनहर निशा ललाम सकल सखियन सुख कारी ॥ ४ ॥
काहू सखि गर डारिं भुजा रघुवीर रसिक वर।
गान तान बिस्तार करत अतिसय उमंग भर ॥ ५ ॥
सुनि सुठि सुखद रसाल गान सब सखी सयानी।
परम बिमोहित भईं सकल प्रीतम ढिग आनी ॥ ६ ॥
सुनहिं परम मृदुगान निकर नवला सुख मानी।
यदपि प्रशंसा करन चहहिं सकुचहिं अस जानी ॥ ७ ॥
अद्भुत गान तरंग रंग जिन के दृग पूरे।
पिय नवाङ्ग रस रंग भंग होवै जनि रूरे ॥ ८ ॥

अस निज हृदय बिचार सखी नहिं करहिं बड़ाई ।
सुनहिं गान कमनीय हृदय में अति सुख पाई ॥ ६ ॥
यदपि न चाहत अलीं प्रेम बश रहा न जाई ।
बोली कोउ सहचरी हृदय में अति हुलसाई ॥१०॥
हे जीवन धन प्राणनाथ सुन्दर किशोर वर ।
परिकर प्राणाधार मधुर मन हरन सरस तर ॥११॥
सुन्दर पुरुष मझार सकल गुण सुषमा पावत ।
देत सबहिं सुख स्वाद जगत में सुयश बढ़ावत ॥१२॥
जिमि सुठि साधक पाय मन्त्र फल देत महाना ।
यद्यपि अति लघु मन्त्र तदपि महिमा जग जाना ॥१३॥
प्रेम विधान समेत करै जो अनुष्ठान वर ।
लघु प्रभाव को मन्त्र देत फल अगम सुगम कर ॥१४॥
तैसे ही मम कान्त आप कमनीय सुघर वर ।
मन मोहन रसिकेश श्याम सुन्दर उदार तर ॥१५॥
तब स्वरूप अनुसार सुगुण सब करत प्रकाशा ।
याही से शृंगार आदि रस करत निबासा ॥१६॥
अहा चपल चितचोर आप करि कृपा अपारा ।
लेते नहिं अवतार आय ब्रह्माण्ड मझारा ॥१७॥
तो दृग धारी पुरुष सकल दृग सफल न करते ।
जो पै कृपा अगार आप नहिं सुठि तन धरते ॥१८॥
तब सम रूप अनूप जगत में अपर न पाते ।
देखे बिन पद कंज न जिय की जरनि मिटाते ॥१९॥

जिसने जीवन प्राण न तव मुख चन्द्र बिलोका ।
पाप ताप ते दहत कदा नहिं होत अशोका ॥२०॥
तव मुखचन्द्र अनूप सुधारस वर्षन हारो ।
किमि पावैं जड़ जीव न जिन विधु बदन निहारो ॥२१॥
तव दर्शन विन नाथ कहहु किमि पाप नशावैं ।
बिन तव कृपा कटाक्ष कौन भव सिन्धु सुखावैं ॥२२॥
जरा मरण अरु जन्म जीव त्रय ताप मिटाई ।
तुम बिन "सीताशरण" कौन हँसि कण्ठ लगाई ॥२३॥
हे अखिलेश उदार सकल जग आश्रय दाता ।
कृपा सिन्धु सुख सदन सतत सज्जन जन त्राता ॥२४॥
वात्सल्य सौशील्य आदि सौहार्द सरलता ।
सरस रूप लावण्य माधुरी परम सुभगता ॥२५॥
प्रीति रीति रस रीति परम सौलभ्य उदारा ।
तुम बिन जीवन प्राण कौन करतेउ बिस्तारा ॥२६॥
होते नहिं ब्रह्माण्ड माझ तब गुण समुदाई ।
ब्रह्म श्रृष्टि मधि सकल लोक को सरस बनाई ॥२७॥
तुम्हरो रूप अनूप शील गुण गण बिन गाये ।
सकल कला गुण धाम होय पर सुगति न पाये ॥२८॥
नृत्य गान संगीत निपुण गन्धर्व राजवर ।
कीने तव गुण गान बिना उर में न मोद भर ॥२६॥
जब तक चेतन नाथ आप को दर्श न पावै ।
कीने बिन गुण गान तिहारे स्वाद न आवै ॥३०॥

गायेविन गुण रासि बिना तव दर्शन पाये ।
पावे नहिं कल्याण व्यर्थ जग जन्म कहाये ॥३१॥
बिन तब कृपा कटाक्ष कदा सुख शान्ति न पावै ।
करि करि कोटि कलेश भले पचि पचि मरि जावै ॥३२॥
हे प्रीतम चितचोर परम रसबोर रसिक वर ।
तुम्हरो रूप महान तुमहिं आश्चर्य बिबस कर ॥३३॥
पिय तुम परम प्रवीन आदरस लै मुख देखत ।
सकल लोक अभिराम रूप अपनो ही पेखत ॥३४॥
सब जग नयनानन्द दान मेरो यह रूपा ।
मम दृग को आनन्द देइ अस कौन सुरूपा ॥३५॥
मन में करत विचार मिलत नहिं तव दृग तर्सत ।
पुनि पुनि निज मुख निरखि निरखि अपने मन हर्षत ॥३६॥
निज मुखचन्द्र अनूप नाथ तुम देखि न पावत ।
हम सब के बड़ भाग्य चूमि सोइ मुख ललचावत ॥३७॥
हे मम कान्त उदार भाग्य मो सम तव नाहीं ।
चक्रवर्ति नृप सुवन बिचारहु निजमन माहीं ॥३८॥
हम सब परिकर बृन्द भाग्यशाली अति प्यारे ।
निरखत नित मुखचन्द्र सुनत मृदु बचन सुखारे ॥३९॥
तव गुणशील स्वभाव हृदय में अनुभव करहीं ।
"सीताशरण रसेश कण्ठ लगि आनन्द भरहीं ॥४०॥
मम समान अति भाग्य सिन्धु काहू को नाहीं ।
प्राणेश्वर हृदयेश बिचारहु निज मन माहीं ॥४१॥

यद्यपि कमला सकल जगत की श्री कहलावैं।
पर पिय तुम्हरो रूप स्वाद मोसमनहिं पावैं ॥४२॥
हे पिय हम अस कहैं सुनहु रसिकेश श्याम घन।
तव भविष्य में प्राण प्रिया मो सम सोउ नाहिन ॥४३॥
धर्माचार निबाहि ब्याहि जिन को गृह लइहो।
कोहवर हास्य बिनोद माहिं जहँ अति सुख पइहो ॥४४॥
यद्यपि वह सौभाग्य रूप पर मो सम नाहीं।
जीवन प्राण अधार बिचारहु निज मन माहीं ॥४५॥
वह तव नित्य अभिन्न शक्ति तुम को पिय पावहिं।
तो कहिये हृदयेश कौन सो भाग्य कहावहिं ॥४६॥
अति अलभ्य हम सबहिं मिले सब निधि रघुराई।
यदि अभिन्न तब शक्ति मिलै तो कवन बड़ाई ॥४७॥
याते जीवन प्राण भाग्य हमरो अधिकाई।
तुम करि कृपा अपार मोहिं लीनो अपनाई ॥४८॥
यहि प्रकार स्तोत्र सुधा बर्षहिं सुकुमारी।
गावहिं गीत रसाल लाल मन मोहन हारी ॥४९॥
रास करत श्रम भयो जानि रघुराज कुँवर वर।
सकल सखिन हिय लाय करत आलिंगन मुद भर ॥५०॥
दृग सो दृगन मिलाय अंक बैठाय रसिक वर।
चूमत अमल कपोल अधर रस पियत हर्षि उर ॥५१॥
मृदु हँसि कण्ठ लगाय रसिक चूड़ामणि रघुवर।
रमि रमाय सुख लेत देत हृदयेश मधुर तर ॥५२॥

लहि प्रीतम को प्यार सकल सखियाँ हर्षाईं ।
मानहुँ सींची सुधा लता सुरद्रुम लपटाईं ॥५३॥
जिमि सींची वर लता पत्र पुष्पादि बढ़ाई ।
लपटत बृच्छ मझार परम सुषमा उमगाई ॥५४॥
तिमि सब सखी समाज सजन माधुरी बिलोकहिं ।
प्रेमावेष विशेष न पल डारहिं दृग रोकहिं ॥५५॥
लखि पिय सुछबि अपार मन्द हँसि हँसि उर लागहिं ।
करत प्राणधन प्यार हृदय गुनि अति रस पागहिं ॥५६॥
सखी समूह सनेह सनी निज हृदय मझारी ।
करत सबनि ते अधिक प्रेम मो कहँ धनुधारी ॥५७॥
यहि बिधि सब सहचरीं प्राण वल्लभ रस पागीं ।
करहिं सुछबि रस पान हृदय में अति अनुरागीं ॥५८॥
प्रीतम गुण गण भरित ललित पद सुद्रुत बनाई ।
गावत गीत रसाल लाल सुनि सुनि सुख पाई ॥५९॥
वीणा वेणु मृदंग सरस मृदु स्वरन बजावहिं ।
तीन ग्राम स्वर सहित सखी कोकिल रव गावहिं ॥६०॥
सुनि सबके वर गान प्रेम रस दान रसिक वर ।
नायकमणि लखि हाव भाव हर्षे उमंग भर ॥६१॥
मण्डल रास मझार सखिन सँग नृत्यन लागे ।
करि सबको रसबोर चोरिचित सुख रस पागे ॥६२॥
दूषण रहित रसेश राजनन्दन मन रंजन ।
नृत्य गान संगीत कला कुशला रघुनन्दन ॥६३॥

गान कला कमनीय विज्ञ गन्धर्व राज वर ।
तिन सबसों अतिश्रेष्ठ नृपति सुत अति उदार तर ॥६४॥
मिथ्या अनुचित रहित एक रस अमल अनामय ।
सरल सुशील सुजान सरस मति अति करुणामय ॥६५॥
पावन चरित अपार सुयस जग पाप ताप हर ।
सज्जन सुखद सनेह सदन सब बिधि प्रमोद कर ॥६६॥
लीला ललित रसाल अखिल चेतन हितकारी ।
परमानन्द स्वरूप सतत सन्तन सुखकारी ॥६७॥
गावहिं सुनहिं सनेह सहित ते रति रस पावहिं ।
सुफल करहिं जग जन्म अन्त साकेत सिधावहिं ॥६८॥
दोषारोपण करत होय अनुचित अतिभारी ।
परमतत्त्व परमीश परमगति रासबिहारी ॥६९॥
जे जड़मति अति अज्ञ अधम सब भाँती अभागी ।
दोष देहिं तेइ सतत जासु बिषयनि मति पागी ॥७०॥
रास मण्डल मधि नटत राम रसिकेश सुभग तर ।
सिरस सुमन ते अधिक परम सुकुमार नेह घर ॥७१॥
चहुँदिशि नव नायिका प्रेमरस भरित्त मधुर तर ।
करहिं गान सुख दान लाल मन मोद भरन वर ॥७२॥
प्रीतम परम प्रसन्न प्रियन पर प्रेम जनावत ।
हँसि दृग दृगन मिलाय चूमि मुख कण्ठ लगावत ॥७३॥
अमित प्रकार सुगन्ध लिये श्रम दूरि करन हित ।
चलत पवन अति मन्द लगत तन सरस करत चित ॥७४॥

पवन देव निशि मध्य करहिं सेवा सुख दाई।
दिन मधि चन्दन अगर सुतन लेपत हर्षाई ॥७५॥
याते श्रम नहिं होत हृदय हुलसत अधिकाई।
सकल सखिन मन हरन करन सुख श्री रघुराई ॥७६॥
चक्रवर्ति नृप सुवन भुवन आनन्द प्रदायक।
रूप अनूप अपार मार मद हर रघुनायक ॥७७॥
स्वेत छत्र सम चन्द्र स्वयं सेवाहित आयो।
रास कुंज कमनीय मध्य सुषमा छिटकायो ॥७८॥
चन्द्र चाँदनी चारु शुभ्र अति सरस सुहाई।
मानहुँ छत्र ललाम रह्यो अद्‌भुत छबि पाई ॥७९॥
स्वेत हंस अति सुभग छत्र सम परत दिखाई।
कदली पत्र विशाल पताका ध्वजा सुहाई ॥८०॥
भूषण बसन अनूप लसत मणि रत्न सु मोती।
परम प्रकाश निबास जगावति जग मग ज्योती ॥८१॥
काम केलि कमनीय कला कौतुक बिस्तारक।
चक्रवर्ति सुत रसिक राज सब जग निस्तारक ॥८२॥
काम कला कल कुशल कामिनी काम प्रदायक।
वर्धन रास बिलाश हास उत्साह विधायक ॥८३॥
नृत्य गान संगीत कला मधि परम विशारद।
सुयश उदार अपार भनत निगमागम नारद ॥८४॥
जिमि अवनीशन मध्य चक्रवर्ती नृप राजत।
तिमि गान्धर्वी कला माहिं रघुवर छबि छाजत ॥८५॥

विश्व नचावन हार रास मधि अलिन हाथ धरि ।
नृत्यत राजकिशोर परमचित चोर नेह भरि ॥८६॥
जे नृत्यक गण कुशल प्रशंसा अति जग माहीं ।
नायक रसिक नरेश नृपति मुत सम कोउ नाहीं ॥८७॥
क्रीड़ा हास विनोद सिन्धु सुख सदन मधुर तर ।
मंजुल मोद मनोज मान मर्दन सुषमाकर ॥८८॥
पुनि पिय परम प्रवीण प्रेम पूरक रस सागर ।
बोले बचन बिनोद बलित वर बिमल बिभाकर ॥८९॥
सुनहु सखी समुदाय सुभग सब सुखद सयानी ।
मेरी प्राणाधार परम प्रिय रति रस दानी ॥९०॥
मेरे मन अभिलाष सकल मिलि पूरण कीजै ।
अर्ध सखीं मम रूप विरचि सखियन सुखदीजै ॥९१॥
मेरो बेष बनाय बिपुल बालन कर धरि के ।
मन्द मन्द मुसुकाय नृत्य कीजै रँग भरि के ॥९२॥
धरि अंशन भुज हर्ष सहित निज कण्ठ लगाओ ।
करि बहु हास बिलाश सबहिं रस रंग रँगाओ ॥९३॥
उर सो उर लपटाय मुदित आलिंगन कीजै ।
रमि रमाय सब सखिन संग प्रेमामृत भीजै ॥९४॥
यह लीला अति सरस होय मो कहँ सुख दाई ।
सुनि मम बचन बिनोद सहित सब करहु सिहाई ॥९५॥
सुनि पिय वयन रसाल बाल सब मृदु मुसुकानी ।
प्रीतम बेष बनाय कछुक सखि हिय हर्षानी ॥९६॥

पीताम्बर तन पहिरि क्रीट कुण्डमल मन हारी।
अँग अँग भूषन बसन सजे पुरुषन अनुसारी ॥९७॥
जसपिय आज्ञा रही करहिं सोइ कौतुक कामिनि।
पावहिं परमानन्द प्रेम पागीं अभिरामिनि ॥९८॥
प्रीतम दृष्टि प्रभाव गौर सखियाँ भई श्यामा।
मानहुँ प्रगटे ललन रूप बहु बिरचि ललामा ॥९९॥
अपर सखीं जो रहीं सकल गौरांगिनि रूपा।
एक एक सखि संग लसत पिय श्याम स्वारूपा ॥१००॥

दो०—नट नायक नागर नवल, नवलन मधि नृप लाल।
चक्रवर्ति पद प्राप्त कर, शोभित नयन बिशाल ॥६॥

सखि जो पिय के रूप रहीं भूलीं तन भाना।
प्रगटेउ पुरुष स्वभाव तियातन ज्ञान मिटाना ॥ १ ॥
तब निज हिय हर्षाय एक एक सखि कर धारी।
नृत्यत प्रेम विभोर लहत सुख स्वाद अपारी ॥ २ ॥
प्रथम यथा पिय रमत रहे सखियन के संगा।
तिमि सब पिय के रूप करहिं अनुपम रस रंगा ॥ ३॥
मण्डल ललित बनाय रमत मिलि बहु पिय रूपा।
दृग सो दृगन मिलाय नटत हँसि सखी अनूपा ॥ ४ ॥
करहिं केलि कमनीय कला कौतुक निधि कामिनि।
लसहिं हसहिं लगि कण्ठ अधर रस पियत सुहागिनि ॥ ५ ॥
तिमि पिय के सब रूप सखिन अलिंगन करि के।
करि अधरामृत पान हँसहिं उर आनँद भरि के ॥ ६ ॥

नृत्यत भरि अनुराग गान गावत सुख पाई ।
लेत नई नइ तान उच्चस्वर हिय उमगाई ॥ ७ ॥
एक एक सखि बीच लसत एक श्यामल रूपा ।
मनहुँ स्वर्ण मणि मध्य लहत छबि मरकत रूपा ॥ ८ ॥
एक सखी तेहि समय आय प्रीतम कर धरि के ।
हँसि सिंहासन पास गई उर आनँद भरि के ॥ ९ ॥
मुदित बिठाये लाल स्वकर कोमल पिय करगहि ।
यहाँ बैठि देखिये सखे यों बचन मधुर कहि ॥१०॥
नृत्यत परिकर निकर सु छबि लखि हिय सुख पाई ।
कृपा दृष्टि हँसि हेरि सबहिं रस रंग रँगाई ॥११॥
भाव भावना भक्ति भरे भव सहित भवानी ।
ध्यावत तव पद कंज हृदय में अति सुख मानी ॥१२॥
नित शिव शिवा समेत सतत सुचि सरस सुहावन ।
मधुर रास रस रंग भरे ध्यावत मन भावन ॥१३॥
ये सब सखी समाज आप की सम्पति रूपा ।
स्वामी इन सब केर सखे तुम रघुकुल भूपा ॥१४॥
सिंहासन आसीन लाल प्रमुदित मन सोहत ।
लखि एक सखी सलोन श्याम सुन्दर अतिमोहत । १५॥
ये सखि अति कमनीय वयस प्रीतम अनुरूपा ।
चन्द्र मुखी रमनीय नटति भरि भाव अनूपा ॥१६॥
प्रीतम करत बिचार अहो ये सखि मन हारी ।
नृत्यति धरि मम रूप मोहिं प्राणहुँ से प्यारी ॥१७॥

भला हमहिं तजि और कौन की यह तिय होई।
यह मम भोग्या सतत अपर भोक्ता नहिं कोई॥१८॥
इन सबने जग त्यागि अन्य आश्रय नहिं लीना।
अति अनन्यता सहित सुदृढ़ मम पद मन दीना॥१९॥
निज सुख स्वाद भुलाय करहिं सेवा दिन रैना।
याते अति प्रिय मोहिं कियो मेरे उर ऐना॥२०॥
जो तजि सब सन्सार लगावै मुझ में प्रीती।
मैं अपनावौं वाहि सतत मेरी यह रीती॥२१॥
यद्यपि सखी समाज सकल सौन्दर्य सिन्धु सम।
जिनकी सुछबि निहार लगैं रति रमा उमा कम॥२२॥
प्रीतम प्रीति प्रतीति पगीं सब शुभ गुण खानी।
सेवहिं नित पद कंज मंजु पिय को सुख दानी॥२३॥
याही से रसिकेश भये जिन के बश माहीं।
सब बिधि पूरण काम राम चाहत कछु नाहीं॥२४॥
जग की त्रष्णा त्यागि शुद्ध मन प्रभु पद ध्यावै।
सब बिधि आत्मसमर्पि हृदय दृढ़ भाव बनावै॥२५॥
अति अनन्य व्रत धारि करै सेवा सुख दाई।
रीझहिं "सीताशरण" अवसि सियवर रघुराई॥२६॥
नतरु करै बहु यत्न जोग जप तप समुदाई।
प्रीतम पावन प्रेम कदा कोउ लहत न भाई॥२७॥
सखिन देन सुख स्वाद हेत यह अनुपम लीला।
करत रसिक शिरमौर सखिन चितचोर रसीला॥२८॥

यदपि सखिन नहिं कह्यो तदपि रसिकेश सुघर वर ।
अलिन मध्य तजि लाज बने ललना प्रमोद भर ।।२६।।
जो सखियाँ पिय रूप धरे तिन को कर गहि पिय ।
लागे करन बिहार परम कौतुकी हर्षि हिय ।।३०।।
जेहि सखि संग बिहार करत सो हृदय लजाई ।
सोचति हूँ मैं कौन ज्ञान सब जाति भुलाई ।।३१।।
प्रीतम परम प्रवीण प्रीति पागे प्रमदन सँग ।
निज ऐश्वर्य भुलाय रँगत अवलन के रस रँग ।।३२।।
लीला ललित ललाम करत मन निरखत मुनिवर ।
बदत बचन वर ब्यास महाँ ऋषि आश्चर्य तर ।।३३।।
अहो पूर्ण तम ब्रह्म अखिल जग कारण स्वामी ।
पर तर परम परेश सकल उर अन्तर यामी ।।३४।।
सो निज पद बिसराय मधुर रस बश अति भयेऊ ।
अज अनन्त अनवद्य प्रेम बन्धन बँधि गयेऊ ।।३५।।
अति रसज्ञ मतिमान तिनहिं यह चरित सुखद अति ।
पावत मोह विशेष अज्ञ नर निरस मन्द मति ।।३६।।
उत्तम ललित रहस्य प्रेम बर्धक प्रमोद कर ।
रसिकन जीवन प्राण सरिस पिय हृदय भाव भर ।।३७।।
रति रस बर्धन हेतु लाल लीला बिस्तारी ।
कौतुक करत अनेक एक सुनिये मनहारी ।।३८।।
पिय बपु धारी बाल एक आली रस रंगा ।
रँगी पगी सब भाँति मधुर रस रमन प्रशंगा ।।३९।।

तिरस्कार कछु पाय गई पिय पर रिसियाई।
मन में करति बिचार मोहिं निदरत रघुराई ॥४०॥
नृप किशोर चितचोर सतत अपने मन मानी।
करत हृदय अस जानि मान अपने मन ठानी ॥४१॥
अति एकान्त मझार कुंज मधि गई छिपाई।
पिय बपु धारी सखी विरह वश अति अकुलाई ॥४२॥
ललना बपु धरि लसत ललन बोलत मुसुकाई।
सोच करहु जनि प्राणनाथ मैं देउँ मनाई ॥४३॥
पकरि तासु कर कंज मंजु बन खोजन लागे।
जहँ तहँ बिपिन मझार परम प्रेमामृत पागे ॥४४॥
लता कुंज मधि निरखि वाहि कर जोरि मनावत।
पुनि पुनि बन्दन चरण आपनी सपथ सुनावत ॥४५॥
कहत मानु भामिनी प्रान धन अति दुख पावत।
बचन चातुरी माहिं वाहि सब भाँति भुलावत ॥४६॥
तुमरे विरह वियोग पाय अवधेश दुलारे।
अतिसय होत अधीर मानु वर बैन हमारे ॥४७॥
यहि बिधि ताहि मनाय ललन ललना तन धारी।
पिय बपु धारी सखी मिलायेउ वाहि सुखारी ॥४८॥
इमि बहुँ केलि कलोल करत रसिकेश श्याम घन।
लहत अमित सुख स्वाद भरत वर भाव सखिन मन ॥४९॥
यहि बिधि सब भामिनी हृदय जब मान बढ़ावैं।
रघुनन्दन नागरी रूप धरि वाहि मनावैं ॥५०॥

निज बपु धारी सखी ताहि से वाहि मिलाबत ।
सो सखि भरी बिलाश वाहि मिलि अति सुखपावत ॥५१॥
जानत सब भामिनी रसिक वर हमहिं मनाई ।
करत बिलाश बिनोद प्रेम पूरक रघुराई ॥५२॥
पर यह भेद ललाम वाम कोउ जानत नाहीं ।
मोहिं पर पिय आशक्त बिचारत सब मन माहीं ॥५३॥
मेरे ही बश रहत श्याम सुन्दर सुशील वर ।
रमि रमाय सुख लेत देत प्रीतम सुषमा कर ॥५४॥
पुनि पिय परम प्रवीन प्रेम पूरक उदार तर ।
निज स्वरूप मधि प्रगट भये हिय अति उमंग भर ॥५५॥
लखि ललना गण सकल हृदय अति बिस्मय पाई ।
बोलहिं बचन सप्रेम प्रणय भरि कोप जनाई ॥५६॥
तिरस्कार करि कहहिं सखी ये राज दुलारे ।
ठगिया छली प्रपंच पगे रस रूप उजारे ॥५७॥
हम सबकी बांचना करी नीके रघुराई ।
इनकी करनी भली भाँति हमने लखि पाई ॥५८॥
जब मैं करिके मान विपिन में गई छिपाई ।
तब जीवन धन प्राण नाथ भल अवसर पाई ॥५९॥
धरि ललना को रूप मनावन हित मम पासा ।
पहुँचे राजकिशोर हृदय भरि परम हुलासा ॥६०॥
पुनि एक सखी सलोन वाहि निज रूप बनाई ।
सुन्दर अवसर पाय गये एकान्त लिवाई ॥६१॥

करि तेहि संग विहार वाहि रस रंग डुबाई।
रति रस लम्पट लाल ताहिं निज अंग रमाई ॥६२॥
करि वाके सँग रमण शीघ्र आये सुख पाई।
अति स्वारथी प्रवीण नृपति सुत नेह जनाई ॥६३॥
आये हमरे पास कौन इनको विश्वासा।
राजकुँवर स्वच्छन्द सदा आनन्द प्रकाशा ॥६४॥
नव योवन सम्पन्न सरस सुकुमार छबीले।
नायक वर रघुवीर मधुर रस रमण रँगीले ॥६५॥
आगम निगम सु पंथ त्यागि परकीयन संगा।
रमत रसिक शिरताज राजनन्दन रस रंगा ॥६६॥
नृपति कुमार स्वतन्त्र करत लीला मन मानी।
इनकी करनी कुटिल सखी नीके हम जानी ॥६७॥
इमि सब सखीं सनेह सनी सुचि सरस सयानी।
बोलहिं वचन बिनोद बलित पिय हिय सुखदानी ॥६८॥
प्रणय प्रपूरित प्रेम भरे वर बैन सरस अति।
बोलहिं वाम समूह सुनत रघुवर उदार मति ॥६९॥
अशरण शरण अनाथ नाथ दीनन सुखदाता।
आरत बन्धु कृपालु स्वजनहित रत जग त्राता ॥७०॥
बिषय बासना रहित शान्त चित द्वन्दातीता।
आत्म समाधी मगन सतत मन इन्द्रिन जीता ॥७१॥
जिन ने विषय बिलास आश की गन्ध मिटाई।
सुमिरत सीतराम देह की सुरति भुलाई ॥७२॥

जग सन्बन्ध मिटाय सदा प्रभु में अनुरागत ।
पावत परमानन्द सदा प्रेमामृत पागत ॥७३॥
उन के बन्धु उदार करत सब सार सँभारा ।
सन्त सुखद सुकुमार सतत रघुवंश कुमारा ॥७४॥
निज अपराध बिचारि जोरि कर सकुच समेता ।
सोचत राजकिशोर परम चितचोर सचेता ॥७५॥
पंकज इव कर कंज पकरि सखियन वरियाई ।
बनज नाल से बाँधि दीन पुनि आँख दिखाई ॥७६॥
कहहिं कहहु सुकुमार श्याम सुन्दर सच बैना ।
हम सबको तजि गये कहाँ पिय राजिव नैना ॥७७॥
कौन कौन कृत किये झूठ जनि बोलो प्यारे ।
दीजै सत्य बताय अहो हृदयेश हमारे ॥७८॥
तब दैइहैं हम छोड़ि अन्यथा क्रोधहु कीने ।
छुटिहो नहिं प्राणेश तुमहिं नीके हम चीने ॥७९॥
लीजै कहा बिगारि नाथ यह मोहिं बतावो ।
याते भाषो सत्य वृथा जनि बात बनावो ॥८०॥
सुनि तिन के वर बैन मन्द हँसि हेरि रसिक वर ।
करि तिरछे दृग शैन बदत बानी बिनोद भर ॥८१॥
रति रस वर्धक बचन रचन सुचि सरस सुधा सम ।
सुनत श्रवण सुख श्रवत भरत मुद नशत मोहतम ॥८२॥
रखन हेतु रुचि सखिन केर पिय प्रीति जनाई ।
बोलत बैन रसाल लाल अति आनँद पाई ॥८३॥

अहो सहचरी सकल सुनहु मेरी सुठि बानी ।
झूठ सत्य को न्याय करन अवला नहिं जानी ॥८४॥
न्यायाधीश महान सभासद जानत नीके ।
अवला चपल स्वभाव भरी अवगत सबहीके ॥८५॥
झूठ सत्य की बात कहो तुम सब क्या जानो ।
अवला गण चंचला होत श्रुति शास्त्र बखानो ॥८६॥
हास बिलाश बिनोद समय सत असत न व्यापत ।
होत नहीं अघ अयश सतत सुचि सन्त बतावत ॥८७॥
तुमरो चपल स्वभाव अहौं मैं अति मितभासी ।
तुमरे ढिग वक्तव्य बृथा सुनि करि हो हाँसी ॥८८॥
आसय युत मम बचन नहीं समझो गी प्यारी ।
याते मैं किमि कहौं सुनहु सब राजकुमारी ॥८९॥
जो कछु निर्णय देइ सभा सोई उर धारो ।
एक बात उर धरो कहौं मैं देखि बिचारो ॥९०॥
कोटिन कल्प प्रयंत करै कोइ बिबिध उपाई ।
नाहिन अस सामर्थ वान मोहिं बाँधि सकाई ॥९१॥
यदि मन करो बिचार आज मैं बन्धन कीना ।
लखि तव प्रेम पुनीति तुमहिं मैं आदर दीना ॥९२॥
तव बन्धन स्वीकार कीन मैं स्वयं बँधायो ।
तुमरे उरको भाव निरखि बिन मोल बिकायो ॥९३॥
दियो अमित सुख स्वाद तुम्हाँरो सुयश बढ़ायो ।
निज इच्छा से बँधेउ कला कौशल दिखायो ॥९४॥

सुनि पिय के वर बचन हँसी सब सखी सयानी।
चतुराई पहिचान सकल बोलीं मृदुबानी ॥९५॥
हे हृदयेश उदार कौन अस पुरुष महाना।
जो परि मेरे फंद छुटै अस को बलवाना ॥९६॥
प्रीतम तुम्हरोउ छुटब कठिन सोचहु मन माहीं।
अपर कौन बलवान होय मेरे वश नाहीं ॥९७॥
पर तुम मेरे प्राण नाथ मम नयनन तारे।
जीवन धन रसिकेश मोहिं प्रणहुँ ते प्यारे ॥९८॥
करि बन्धन से मुक्त देहुँ तुम को यश भारी।
जाइय सभा मझार स्वजन मन आनँद कारी ॥९९॥
परम यशस्वी लोग बूझिहैं कहँ से आये।
तब कहि हो हर्षाय लाल मन मोद समाये ॥१००॥

दो०-परम प्रतिष्ठित व्यक्ति जब, बूझैं पिय हर्षाय।
कहँ से आये लाल तब, बोलौगे सकुचाय ॥७॥

नवलन बन्धन परेउ छूटि तुमरे ढिग आयो।
सुनि हँसिहैं सब लोग नाथ तुम बहुयश पायो ॥ १ ॥
प्रभु तुम अति बलवान तियन बन्धन मोचन करि।
आये हमरे पास हृदय अतिसय उमंग भरि ॥ २ ॥
बलिहारी तव लाल पराक्रम सींव महाना।
तुम्हरे सम रघुवीर अवनि मण्डल नहिं आना ॥ ३ ॥
यद्यपि हम बलवान कला निधि अति यश पाये।
सकल सुरासुर जीति आपने सुबस बनाये ॥ ४ ॥

पर हम सब के श्रेष्ठ आप जो अबलन जीती।
आये बन्धन छोरिं नाथ जानत भल नीती ॥ ५ ॥
तिय जीतन को सुयश कदा हम सब नहिं पायो।
आप पराक्रम सींव जीति तिय मोद बढ़ायो ॥ ६ ॥
याही से तुम लाल चक्रवर्ती पद पैइहो।
देत तुमहिं हम तिलक सदा आनन्द समैंइहो ॥ ७ ॥
सुनि इन सखिन सनेह सने वर बचन रसिक पिय।
पावत परमानन्द प्रेम पूरति उदार हिय ॥८॥
बोले बचन बिनोद वलित बिधु वदन निहारी।
सुनहुँ सहचरी सकल मोहिं प्राणहुँ ते प्यारी ॥ ९ ॥
यदि अग तव मन माहिं अपर नायिका संग करि।
रमि पमाय सुख स्वाद लियो मैंने उमंग भरि ॥१०॥
तुम सब परम प्रवीण लखहु मुख चन्द्र हमारो।
जैसे हो बिश्वास सोई वर यतन बिचारो ॥११॥
अपर नागरी संग रमण मैंने यदि कीना।
वाके मुख की गन्ध केर कहिये कछु चीना ॥१२॥
सुनि पिय के चातुरी भरे वर बचन मधुर तर।
श्रवण सुखद चितचोर परम रस बोर हृदय हर ॥१३॥
हँसि सब बाल रसाल बचन बोलहिं सुख मानी।
सुनिये प्राण अधार स्वजन मन आनँद दानी ॥१४॥
अहो चपल चितचोर चतुर चूड़ा मणि मन हर।
राजकिशोर रसज्ञ रास रसिया सनेह घर ॥१५॥

यह वर युक्ति बताय अधर रस चहत पियावन।
किन्तु नहीं यह होय सुनहु पिय अति मन भावन ॥१६॥
तासु अधर रस लगेउ नाथ तुमरे मुख माहीं।
याते जीवन प्राण पान करिहैं हम नाहीं ॥१७॥
अति अभीष्ट यदि होय धोय लीजै मुख प्यारे।
तब हम सब चाखिहैं अधर रस राज दुलारे ॥१८॥
पर यह भी मम भूल सुनहु रसिकेश श्याम घन।
तब ऐसोइ व्यवहार सतत प्रीतम उदार मन ॥१९॥
तो हम अबला बृन्द पार कहँ तक पावैंगी।
हृदय हरन मुख चन्द्र कहाँ तक धुल बावैंगी ॥२०॥
सकल कला निधि आप चतुर शिरताज राजसुत।
अर्चित सकल प्रवीण प्रशंसत सब सनेह युत ॥२१॥
जलचर जलमधि बसत कहहु जलपान करत कब।
देखि सकै को उनहिं कौन कहि सकै पियत कब ॥२२॥
पुनि नभ चर खग बृन्द सदा बिचरत सुख पाई।
भूतल बासी जीव तासु समता न कहाई ॥२३॥
ऐसेहि प्राणाधार आप सर्वज्ञ कला कर।
परम उदार समर्थ चतुर शिरताज सुछबिधर ॥२४॥
हम अबला बल हीन महाँ भोरी रघुराई।
पिय गुण गण अगार करत श्रुति सन्त बड़ाई ॥२५॥
तब चतुरता अपार कौन उत्तर दै पावै।
को ऐसो मतिमान तुमारी थाह लगावै ॥२६॥

हे अवनीश कुमार मार मर्दन विनोद घर।
छल प्रपंच आगार रूप रस सार हृदय हर ॥२७॥
राजबंश अवतंश नाथ सुनिये मम बानी।
कूटनीति छलनिरत नृपति परिवार बखानी ॥२८॥
शुद्ध सत्य मय नीति यदपि नृप जानत अहहीं।
छल प्रपंच में करत रहत ब्यवहार सदाहीं ॥२९॥
जिमि हिमगिरि में बिबिधि धातु मणि रतन अपारा।
बिपुल औषधी ललित महाँ बिष धर मणियारा ॥३०॥
जलधि रतन मणि भरित तदपि बहु जन्तु भयंकर।
मगर मत्स अरु नाक जीव भक्षक अशंक उर ॥३१॥
यद्यपि वेद मझार शुद्ध तम ज्ञान महाना।
मारण मोहन मन्त्र तदपि श्रुति माहिं बखाना ॥३२॥
ऐसे ही हृदयेश प्राण वल्लभ मम प्यारे।
रूप शील गुण प्रेम सदन रस निधि उजियारे ॥३३॥
सकल कला कल कुशल निखिल विद्या भण्डारा।
मन मोहन चित सरस दयानिधि परम उदारा ॥३४॥
तिय बंचक रसिकेश यही अवगुण एक भारी।
यद्यपि पिय गुण धाम काम पद अवध बिहारी ॥३५॥
मम बन्धन को छोरि यदपि छुटते पिय नाहीं।
पाय रहे बहुखेद नाथ अपने मन माहीं ॥३६॥
हम सब के उर माहिं दया देवी को बासा।
दया बिबस हम मुक्त करहिं हिय लहिय हुलासा ॥३७॥

अब प्रसन्न पिय सोहु प्राण प्रीतम सुषमा घर।
रूप शील सुख सदन मदन मद हर उदार तर ॥३८॥
जाके सँग पिय रमत परम सौभाग्यबती तिय।
पावेगी मनमोद अमित पाकर तुमको पिय ॥३९॥
वाही पर पिय ढरे देन चाहत सुख स्वादा।
रमि रमाय हृदयेश लहत अतिसय अह्लादा ॥४०॥
वाही को सौभाग्य नाथ सर्वदा बढ़ाइय।
हम सब परम प्रसन्न हृदय में जनि घबड़ाइय ॥४१॥
वाके सम सौभाग्य कहाँ मेरो हृदयेश्वर।
जीवन प्राण अधार रसिकवर हे अखिलेश्वर ॥४२॥
वाकी प्राप्ति मझार न हम बाध कछु दैइहैं।
तव रुचि में रुचि राखि सतत आनँद उर पैइहैं ॥४३॥
याते तजि संकोच नाथ वाको सुखदीजे।
रमि रमाय हर्षाय हर्षि अनुपम रस लीजै ॥४४॥
श्री सुरसरी पुनीत मध्य धारा बिच राजत।
वाको ग्रीष्म मास केर नहिं प्यास सतावत ॥४५॥
अरि रूदन यहि भाँति आप की कृपा कोर लहि।
अन्य शत्रु से कदा नहीं जन उर अन्तर दहि ॥४६॥
वह नायिका नवीन कृपामृत पाय तिहारी।
सकल सखिन शिरमौर बनी रति रस अधिकारी ॥४७॥
तव सनेह की गंग बीच निबसति सो बाला।
हम सब ग्रीष्म सूर्य किरण सम हे नृप लाला ॥४८॥

वाके सुख सौभाग्य केर बाधक हम नाहीं ।
राजकुँवर चितचोर बिचारत निज मन माहीं ॥४९॥
श्रीसुरसरि जल परसि मिटत रबि किरण प्रभावा ।
शीतलता अनुभवति तेज अरु ताप नशावा ॥५०॥
हम समर्थ नहिं होहिं कदा तैसे नव नागर ।
निसंकोच रमि तासुसंग सब बिधि सुख सागर ॥५१॥
पाइय अति आनन्द हृदय में राजदुलारे ।
हम सब तव पद कंज मंजु के रहहिं सहारे ॥५२॥
जगत श्रेष्ट श्रीचक्रवर्ति तिनके सुपुत्र वर ।
कृपा सिन्धु कमनीय सरस सज्जन प्रमोद कर ॥५३॥
पित्र तव कृपा स्वरूप सरिस मधि हम सब रहहीं ।
तदपि नाथ अति दुसह विरह वेदन नित सहहीं ॥५४॥
जाको करि अति कृपा आप ने आदर दीना ।
हम सब शिर की तिलक बनी अतिसय तप कीना ॥५५॥
अब अस कौन समर्थ वाहि जो सकै हटाई ।
सुनहु कृपा सुख धाम राजनन्दन चित लाई ॥५६॥
सरिता स्थित पुरुष काहिं रवि ताप न लागत ।
सीतलता अह्लाद पाय अति सय सुख पागत ॥५७॥
तिमि जीवनधन प्राणनाथ प्रीतम सुजान वर ।
हम सब तव कमनीय कृपा सरि बीच वास कर ॥५८॥
शत्रुदवन सुखसदन अखिल जग आनँद दाता ।
वरदेश्वर हृदयेश सतत सज्जन जन त्राता ॥५९॥

तव सु कृपा सरि पाय नाथ क्या काम पिपासा।
बनी रहे सर्वदा मोहिं ऐसी नहिं आसा ॥६०॥
हे चितचोर किशोर वाहि जेहि भाँति रमायो।
परम एकान्त बिहार कीन रस रंग रँगायो ॥६१॥
तिमि हम सब नागरिन संग हे राज दुलारे।
कीजै सरस विनोद लहिय सुख स्वाद अपारे ॥६२॥
दीजै निज सुचि प्यार परम सब बिधि उमंग भर।
हाव भाव संयुक्त मधुर रति रमण सरस तर ॥६३॥
यहि बिधि व्यंग विनोद भरे वर बचन सुनाये।
निर्मलचित रघुवीर अचल उर छोभ न पाये ॥६४॥
अति गम्भीर उदार रसिक शिरताज नेह निधि।
अछत अमल अनूप भूमि भूषन सबही बिधि ॥६५॥
उन बिलासिनिन मध्य नवल नायक रघुनन्दन।
मृदुहँसि हेरि कटाछ सहित बैठे रस रन्जन ॥६६॥
मुख नहिं बोलत बैन नयन सन सयन चलाई।
कीनो सबहिं प्रसन्न प्रेम पूरक रघुराई ॥६७॥
परम दैन्यता पूर्ण बचन बोलत सनेह भरि।
मम प्राणाधिक सकल प्रिया पावनि सुनेह सरि ॥६८॥
यहि बिधि सबहिं प्रसन्न किये रसिकेश सुभग वर।
"सीताशरण" अधार प्यार वर्धक उदार तर ॥६९॥
यह प्रभु केर स्वभाव होत शरणगत जोई।
करत न वापर क्रोध चूक होवै किन कोई ॥७०॥

रमणीयता सदैव किये धारण रसेश वर।
अखिल लोक अभिराम काम नाशक विनोद घर ॥७१॥
निज स्वभाव गुण माहिं सदा सब जगहिं रमावत।
आश्रित सुखद सुजान सुजन कोउ खेद न पावत ॥७२॥
राम नाम सुख धाम करै पावन को पावन।
महिमा अमित अपार सतत शिव अज मुनि भावत ॥७३॥
प्राणिमात्र सुख दान अस्तु श्री राम कहावत।
निगम नेति कहि थकत कदा सोउ पार न पावत ॥७४॥
चक्रवर्ति महराज अखिल अवनीश मुकुटमनि।
तस्य पुत्र रघुवीर राम रमणीय बेष बनि ॥७५॥
शुभगुण गण आगार सकल कल केलि कला कर।
रूप शील सौन्दर्य सिन्धु सुषमा सनेह घर ॥७६॥
जगत रमयिता अमित चन्द्र बदनी रमणी पिय।
अखिल रतन के अग्र गण्य भोक्ता उदार हिय ॥७७॥
निखिल कामिनी काम कला पूरक नव नागर।
अशंखेय सहचरिन संग बिहरत सुख सागर ॥७८॥
सकल नायिका बृन्द परम भोक्ता नायक वर।
रमत रसिक शिरमौर शरदनिशि मधि प्रमोद भर ।७९॥
करत सरस मन हरन रासलीला सुखदाई।
सकल सखिन अह्लाद देत निज अंग रमाई ॥८०॥
मृदुहँसि लागत कण्ठ सबनि निज कण्ठ लगावत।
अज अशेष अनवद्य मधुर रसबश कछु गावत ॥८१॥

इमि वर्णन करि सूत बदत शौनक मुनि सुनिये।
यह अति मधुर रहस्य सतत मन मानस गुनिये ॥८२॥
काम कला सम्पन्न अलौकिक चरित सरस तर।
श्री शृंगार रहस्य भाव पूरित बिनोद वर ॥८३॥
अखिल विश्व सुख सदन सबहिं सब मंगल दायक।
यह रहस्य रमनीय सकल आनन्द विधायक ॥८४॥
श्री महराज कुमार मार मद मथन सुभग वर।
वैभव रास बिलाश हास सुख स्वाद मधुर तर ॥८५॥
निज मति गति अनुसार रहस कछु वर्णि सुनायो।
श्री गुरुदेव उदार दया करि मोहिं बतायो ॥८६॥
अति पुनीत अति अमल चरित यह मधुर सरस तर।
यहि मधि देवैं प्रीति हमनि रघुवर सुषमा कर ॥८७॥
उनकी कृपा कटाक्ष पाय यह रस नित ध्यावैं।
मंगल मोद विनोद भरे आनन्द समावैं ॥८८॥
जयति सरस सुखसदन सरस सुषमा सनेह घर।
पावन परम प्रमोद पगे प्रीतम उदार तर ॥८९॥
जयति प्रणत प्रतिपाल प्रेम पूरक प्रिय नायक।
परतम परम परेश परम गति प्रभु सब लायक ॥९०॥
जयति अमल अनवद्य अखिल कल केलि कलाकर।
राजकुँवर चितचोर परम रसबोर मधुर तर ॥९१॥
जयति नायिका नेह नवल ग्राहक रस रासी।
नृपसुत रस दातार मधुर रस रास बिलासी ॥९२॥

जयति सरस सुकुमार कोटिशत मार मान हर ।
जयति नवल छबि धाम परम अभिराम सुभग तर ॥९३॥

जयति रास रस रमन समन भय वारिज लोचन ।
जय जय "सीताशरण" प्रीति वर्धक भव मोचन ॥९४॥

जयति सखिन सुख दान प्राण प्रीतम सुजान बर ।
जय हृदयेश उदार प्रीति पालक सुषमाकर ॥९५॥

जयति स्वजन मन मोद भरन अनुपम रस सागर ।
जय जय "सीताशरण" प्राण वल्लभ नव नागर ॥९६॥

दो०-विश्वनाथ सीतारमण, उर प्रेरक सुख धाम ।
सीताशरण कृपा करहिं, रसिकेश्वर अभिराम ॥ ८ ॥

इति श्री युगल रहस्य माधुरी विलाशे, देवकन्यादि
परिहासोपालम्भन रास रस विकाशे
सीताशरण सुमति प्रकाशे
पंचमोऽध्यायः सम्पूणम्

सर्वाधिकार सरक्षित
१४-६-2000

32
जानकी शरण देहरादून

सदा चिरंजीवो रंग भरी जोरी।